वेद ईश्वरीय वाणी

वर्ष : 9 अंक: 2 अक्तूबर 2019 – मार्च 2020 अर्द्ध–वार्षिक

विद्वान् हमें वेद विद्या द्वारा पवित्र करें

ओ३म्

ओ३म्

''पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।''

(यजुर्वेद मन्त्र 19/39)

(जातवेदः) हे उत्पन्न हुए मनुष्यों में ज्ञानी, विद्वान्! जैसे (देवजनाः) वेद ज्ञाता, विद्वान् और धार्मिक जन (मनसा) वेद-विज्ञान से, मुझे (पुनन्तु) पवित्र करें, मेरी (धियः) बुद्धियों को (पुनन्तु) पवित्र करें, मेरे (विश्वा) सब (भूतानि) प्राणी (मा) मुझे (पुनन्तु) पवित्र करें, वैसे ही हे ज्ञानी, विद्वान्! तू (मा) मुझे (पुनीहि) पवित्र कर।

<u>भावार्थ:</u> माता-पिता का कर्तव्य है कि वे स्वयं एवं अपने पुत्र-पुत्रियों को वेदों के ज्ञाता, विद्वानों से ब्रह्मचर्य और वैदिक शिक्षा प्राप्त कराके, उन्हें विद्वान्-विदुषी एवं धार्मिक बनाएँ तथा साथ ही साथ भौतिक विद्या में भी उन्नति कराएँ।

LEARNED OF VEDAS PURIFY US

Right from the beginning of creation, God blesses us with eternal knowledge of 4 Vedas, follower of which destroys his illusion and purifies himself and thus attains salvation. In the mantra, God preaches us to pray and do hard work to gain vedic knowledge from learned acharya to destroy illusion and thus become learned of Vedas. We should also enable our children to attain preach of learned acharya to destroy illusion and thus to be purified. This process makes our nation strong.

वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब का परम धर्म है

वेद ईश्वरीय वाणी

मुद्रक, स्वामी एवं प्रकाशक
राज कुमार गुप्ता

संपादक
स्वामी राम स्वरूप 'योगाचार्य'
(01892236107)

सह संपादक
साध्वी गीतांजली
(01892236107)

उप-संपादक
सुप्रिया गन्दोत्रा
(9906092521)

''वेद ईश्वरीय वाणी''
प्रकाशन: शिवा एन्कलेव, लेन नं. -3, रूप नगर, जम्मू - 180013 (जम्मू व कश्मीर)
डी.डी. रिप्रोग्राफिक्स
3-एकता आश्रम न्यू रिंहाड़ी, जम्मू -180005 (जम्मू व कश्मीर) से मुद्रित

ओ३म् विषयानुक्रमणिका ओ३म्

• यजुर्वेद मन्त्र 19/39			1
• सम्पादकीय (वेदोक्त कर्म ही प्राणी के....)	–	स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'	3
• Hypocrisy	-	Sadhvi Geetanjali	8
• बच्चों के साथ संवाद	–	डॉ. प्रवीण कुमार शर्मा	11
• शरीर भस्म होने योग्य है	–	ऋचा कौशिक	16
• Are we creating a generation of	-	Sapna	20
• विद्वानों के संग से जाना.....	–	अंजना दीवान	25
• भस्मान्तम् शरीरम्	–	पी.आर.मेहरा	30
• Correspondence between Swami ji & S. Khushwant Singh ji			33
• वेद मार्ग पर चलकर चित्त के कुसंस्कारों..	–	वीना राज	37
• Value of Truth	–	Seema Dogra	39
• गुरु-शिष्य संवाद	–	स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'	44
• No Rituals after Cremation (Yaj. 40/15)	–	Swami Ram Swarup 'Yogacharya'	48
• स्वामी रामस्वरूप जी के वैदिक प्रवचनों..	–	बिपिन बधेका	50
• पौर्णमासी और अमावस्या	–		50
• Medical Science in Atharvaved	-		51
• गुरु जी का ज्ञान	–	शीतल गुप्ता	52
• Papaya	–	Sugandh 'Sudhi'	55
• स्वस्तिकासन	–	स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'	59
• Win over the cycle of Birth & Death	–	Swami Ram Swarup 'Yogacharya'	60
• Subscription Form			

NOTE : Writers are responsible for their own articles

कदापि किसी के साथ छल से ना वर्तें - (मनु स्मृति - 7/104)

वेदोक्त कर्म ही प्राणी के लिए सुखदायक हैं

विश्व के पुस्तकालयों में सबसे पुरातन ग्रन्थ, ईश्वर से उत्पन्न, चारों वेद, विश्व संस्कृति के रूप में आज भी सुरक्षित हैं। पृथिवी रचना के आरम्भ से महाभारत काल तक अर्थात् लगभग एक अरब, 96 करोड़ से कुछ वर्ष अधिक तक तो ऋषि–मुनियों और हरिश्चँद्र, पाण्डव जैसे अनेक राज–ऋषियों की कृपा से पृथिवी पूर्ण रूप से वैदिक संस्कृति से प्रभावित रही, वेदों का सूर्य चमकता रहा जिससे अज्ञान का लेश मात्र भी प्रभाव पृथिवी पर नहीं पड़ा। फलस्वरूप महाभारत, वाल्मीकि रामायण जैसे ऋषि प्रणीत ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि राज्य सभा में धर्म सभा भी होती थी जिसमें ऋषि–मुनियों से वैदिक शुद्ध राजनीति का ज्ञान प्राप्त कर राजा जनता की पुत्रवत् पालना करता था। इस प्रकार दसों दिशाओं में शांतिपूर्ण, मंगलमय वातावरण और प्रजा सब सुखों से सम्पन्न थी। परंतु दुर्भाग्य से महाभारत काल के पश्चात् किसी कारण से जब वेदों का सूर्य अस्त होने लगा तथा तुलसीकृत रामायण, उत्तरकाण्ड, दोहा 100 (ख) के अनुसार भी वेद सम्मत तथा वैराग्य एवं ज्ञान से युक्त जो ईश्वर भक्ति का मार्ग है, मोहवश मनुष्य उस पर नहीं चले अपितु अनेकों नए–नए पंथों की कल्पना कर ली। तब विश्व ने वेदों को नज़र अन्दाज़ किया और यह कहकर कि वेद हिन्दुओं के ग्रन्थ हैं, वे हमें सौंप दिए। हमने भी प्रसन्नता पूर्वक पुरातन काल की तरह ईश्वरीय वाणी वेदों को नतमस्तक होकर स्वीकार कर लिया। ***वर्तमान में वेद भारतीय संस्कृति बन कर रह गए हैं जिन्हें हमें वेदाध्ययन, इनके प्रचार तथा वैदिक शिक्षाओं को आचरण में लाकर इनकी रक्षा करनी है अर्थात् इस संस्कृति को जीवित रखना है, इसे लुप्त नहीं होने देना।*** जहाँ कपिल मुनि ने भी ***सांख्य शास्त्र सूत्र 5/48*** में वेदों को अपौरूषेय अर्थात् वेद ईश्वर से उत्पन्न वाणी हैं, यह सिद्ध किया है, वहाँ ***सांख्य शास्त्र सूत्र 5/51*** में यह भी स्पष्ट किया है कि किसी भी विचार को सत्य सिद्ध करने के लिए वेद ही स्वतः प्रमाण हैं अर्थात् किसी भी विचार/पदार्थ को सत्य सिद्ध करने के लिए वेद

क्रोध से उत्पन्न व्यसन - चुगली करना, बलात्कार, द्रोह, दोषों में गुण देखना। (मनु स्मृति - 7/48)

मन्त्र का प्रमाण देना आवश्यक है। स्वनिर्मित वेद विरुद्ध विचारों को स्वीकार करने का वेद–शास्त्रों में निषेध है। आज हम वेदों में कहे कर्मों के ज्ञान का चिन्तन करेंगे।

कर्म के विषय में प्राय: ***मनु स्मृति श्लोक 2/6*** का उल्लेख आवश्यक हो जाता है, जिसमें कहा– (अखिल: वेद:) सम्पूर्ण वेद (च) और (तद्विदाम् स्मृतिशीले) वेद के ज्ञाताओं द्वारा प्रणीत स्मृतियाँ (च) और (साधूनाम् आचार:) वेदज्ञ सत्पुरुषों का आचरण (धर्ममूलम्) यह धर्म के मूल हैं।

जैसे पिछले युगों के ऋषि–मुनियों, राजा हरिश्चन्द्र, ययाति, दशरथ, पाण्डव आदि हज़ारों राज–ऋषियों, सीता–मदालसा जैसी हज़ारों देवियों तथा जनता के पवित्र वैदिक आचरण को हम ऋषि–प्रणीत महाभारत, वाल्मीकि रामायण आदि ग्रन्थों में देखते हैं, ये धर्म के मूल हैं। आज प्राय: ऐसे आचरण, हमारी सनातन वैदिक संस्कृति को विदेशियों द्वारा नष्ट किए जाने और हम भारतीयों द्वारा ना अपनाने के कारण, नग्न प्राय: हैं, यह दु:ख की बात है। क्योंकि संस्कृति के नष्ट होने से देश का नष्ट होना स्वाभाविक है। जैसा ऊपर कहा धर्म की उत्पत्ति मनुष्यों से नहीं अपितु ईश्वर से होती है और उसका वर्णन ईश्वर से उत्पन्न वाणी–वेदों में है। वेद सनातन हैं और वैदिक संस्कृति में धर्म का अर्थ है– वेदों में कहे कर्तव्य–कर्म, जैसे, ***यजुर्वेद मन्त्र 40/1,2*** में उपदेश है कि ईश्वर प्रतिक्षण हमें देख रहा है इसलिए मनुष्य अन्याय का आचरण एवं वेद विरुद्ध पाप कर्म आदि ना करें, परिश्रम से धनवान् बनें परन्तु मन–बुद्धि परमेश्वर में रखकर, परमात्मा से डरते हुए, पदार्थों का त्यागपूर्वक भोग भोगें। इस प्रकार वेदों में कहे हुए कर्मों को करने के कारण जीव पापयुक्त कर्म नहीं करता। अत: शुभ कर्मों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए मनुष्य, पूर्व युगों की भांति, विद्वान् से वेद विद्या को अन्तिम साँस तक सुनता रहे।

मनु स्मृति भी कहती है कि यदि कोई कहे कि मैं निष्काम हूँ (कर्म नहीं करता) तो ऐसा होना असम्भव है क्योंकि हाथ–पैर, नेत्र, मन, ये सब कामना ही से चलते हैं। इस विषय में जब हम ***यजुर्वेद मन्त्र 3/27*** पर दृष्टि डालते हैं तो मन्त्र में प्रार्थना है कि–

(काम्या: एत) अर्थात् हे परमेश्वर! मुझे कामना करने योग्य अभीष्ट पदार्थ प्राप्त हों ***(मयि व:)*** मुझमें उन कामना करने योग्य पदार्थों की ***(कामधरणम्)*** कामना भी ***(भूयात्)*** सदा बनी रहे। भाव है कि सब मनुष्य कामना करने योग्य अनेक पदार्थों जैसे घर–मकान, अन्न–धन प्राप्त करना विवाह करना, सन्तान प्राप्ति की इच्छा

इन्द्रियों को अधर्माचरण से रोक, राग-द्वेष को छोड़, मोक्ष के लिए सामर्थ्य बढ़ा। (मनु स्मृति - 6/60)

करना, वेदों में कहे सोलह संस्कार, जैसे नामकरण, चूड़ा कर्म इत्यादि की सदा कामना करते हैं तथा करनी चाहिए, तो फिर जीव मनुष्य शरीर पाकर ईश्वर प्राप्ति की कामना भी अवश्य करें। यह सबसे उत्तम कामना है। मनुष्य इन पदार्थों की प्राप्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना और पुरुषार्थ करें क्योंकि बिना पुरुषार्थ प्राप्ति नहीं होती।

ऊपर के विवरण से सिद्ध होता है कोई भी मनुष्य एक क्षण भर भी कामना रहित होकर नहीं रह सकता। इसलिए अधर्म की कामना को हटाकर वेदों में कहे धर्मयुक्त कर्म करने की कामना बढ़ावें। इसके लिए पुरातन युगों की भांति विद्वानों से वेद विद्या सुनना आवश्यक है जिसके अभाव में सत्य–असत्य का निर्णय नहीं हो पाएगा जैसे कि वर्तमान काल में वेद विद्या के अभाव में मनुष्य अविद्याग्रस्त हुआ, अन्धपरंपरागत अन्धविश्वासयुक्त होकर थोथे कर्मकाण्ड कर रहा है। जड़ को चेतन, दु:ख को सुख, अनित्य को नित्य, अपवित्र को पवित्र मान रहा है, इत्यादि।

शुभ कर्म करने के विषय में यह भी विचारणीय है कि वर्तमान में प्राय: मनुष्य केवल धार्मिक ग्रन्थों का पाठ भर करता है। ग्रन्थों में दिए उपदेशों को आचरण में नहीं ला पाता। यह विचार ***भगवद्गीता श्लोक 3/15*** पर भी घटता है, जो ऊपर कहे ***मनु स्मृति श्लोक 2/6*** का ही अनुसरण करता है कि हे अर्जुन! कर्म को ***(ब्रह्म+उत्+भवम्)*** वेद से उत्पन्न हुआ ***(विद्धि)*** जान ***(ब्रह्म)*** वेद ***(अक्षर+सम्+उत्+भवम्)*** अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ है ***(तस्मात्)*** इसलिए वह ***(सर्वगतम्)*** सर्व–व्यापक ***(ब्रह्म)*** परमात्मा ***(नित्यम्)*** सदा ही ***(यज्ञे)*** यज्ञ में ***(प्रतिष्ठितम्)*** प्रतिष्ठित है।

अर्थात् हे अर्जुन! कर्म को वेद से उत्पन्न हुआ जान (परन्तु वेद ज्ञान के अभाव में आज ऐसा कोई नहीं मानता और मनुष्य दु:खी है, अपने मनमाने कर्मकाण्ड बना रखें हैं।) दूसरा कि हे अर्जुन! वेद अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ है। (वेद विद्या के अभाव में इस सनातन कटु सत्य को भी पढ़ लेते हैं पर जानता कोई नहीं। अन्यथा वेदाध्ययन प्रारम्भ न कर दें?) अन्त में यह भी भगवद्गीता के इस श्लोक में तथा अन्य श्लोकों में पढ़ लेते हैं परन्तु यह सत्य ना मानते हैं, ना जानते हैं, ना आचरण में लाते हैं कि वह सर्वव्यापक परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है। अत: प्राय: भारत में और सम्पूर्ण पृथिवी पर भी आज कोई यज्ञ करके अपने दु:खों का नाश नहीं करता। यहाँ श्रीकृष्ण महाराज की आज्ञा का उल्लंघन भी है।

हाथ–पैरों, आँखों से चंचलता के कार्य ना करें। (मनु स्मृति 4/177)

इससे पिछले श्लोक में भी श्रीकृष्ण ने उपदेश किया है कि प्राणी अन्न से, वर्षा यज्ञ से और यज्ञ कर्म से उत्पन्न होता है। इस सत्य को भी वर्तमान में लोग पढ़ लेते हैं परन्तु विश्व का सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ नहीं करते और वर्षा के पानी तथा शुद्ध अन्न के लिए तरसते रहते हैं। इस विषय में व्यासमुनि जी भी महाभारत के वन पर्व में कहते हैं कि– ***वैदिक धर्म में सन्देह करने वाला मनुष्य पशु–पक्षी की योनि में जन्म लेता है।*** युधिष्ठिर स्वयं कहते हैं कि मैं कर्मों के फल की इच्छा रखकर उसका अनुष्ठान नहीं करता अपितु ''देना चाहिए'' यह समझकर दान कर्म करता हूँ और यज्ञ का अनुष्ठान भी कर्तव्य–कर्म समझकर ही करता हूँ। जैसे समुन्दर को पार करने के लिए जहाज़ की आवश्यकता होती है वैसे ही मोक्ष का सुख पाने के लिए धर्माचरण अर्थात् वेदों में कहे कर्म करना ही जहाज़ है, जो भवसागर से पार कर देता है। इस कटु सत्य को भी आज विश्व में भुला दिया है और विश्व दु:खी है क्योंकि वेद विश्व की संस्कृति हैं, कोई माने चाहे ना माने। तो विचारणीय विषय यहाँ यह है कि क्या हमारे देश में गीता आदि सब धर्मग्रन्थों का अनुष्ठान करने अथवा इसका प्रचार करने वाले सन्त आदि उक्त श्लोक को समझ गए हैं और गीता से समय निकालकर वेदाध्ययन द्वारा वेदोक्त कर्म और विशेषकर यज्ञ कर्म, जिसमें ईश्वर प्रतिष्ठित है, उसको समझकर यज्ञ करना प्रारम्भ कर चुके हैं? उत्तर प्राय: यही होगा कि नहीं और यही दु:ख का विषय है। यजुर्वेद कर्मों को करने का ज्ञान देता है अर्थात् सभी शुभ कर्म करने का उपदेश अधिकतर ईश्वर ने यजुर्वेद में ही किया है। अत: हमें यजुर्वेद के प्रथम मंत्र को कभी नहीं भूलना चाहिए जिसमें ईश्वर ने मनुष्यों को उपदेश किया है कि (वायव: स्थ) तुम्हारे प्राण, अन्त:करण और इन्द्रियाँ, उनको (श्रेष्ठतमाय) अत्यंत श्रेष्ठ यज्ञ (कर्मणे) कर्तव्य–कर्म में (प्रार्पयतु) अच्छी प्रकार संयुक्त करें।

पुन: दु:ख का विषय है कि भारतवर्ष में वैदिक संस्कृति को साधु–सन्तों ने प्राय: स्वयं भी अनदेखा कर दिया और स्वयं के विचार जनता पर थोप दिए और जनता को भी यह कह कर गुमराह किया कि वेद कठिन हैं। फलस्वरूप हमें हमारी संस्कृति का ज्ञान ना होने के कारण हमने अपने पूर्वजों द्वारा सदा से किया आ रहा, उक्त विश्व का सर्वश्रेष्ठ कर्म–यज्ञ, त्याग दिया। इस विषय में ***यजुर्वेद मन्त्र 2/22*** का उपदेश है कि यज्ञ में शुद्ध किया हुआ जो घृत एवं द्रव्य अग्नि में डाला जाता है, वह आकाश में

यज्ञ का कराने वाला सदा उत्तम चाल-चलन की शिक्षा को प्राप्त हो। (मनु-स्मृति 4/179)

जाकर वायु, जल और सूर्य की किरणों के साथ रहकर, इधर–उधर जाकर, आकाश के सब पदार्थों को दिव्य गुणों से भरपूर करके–पूर्ण करके निरन्तर प्रजा को सुख देता है। अतः ईश्वर ने मनुष्य को सुख प्राप्ति के लिए नित्य यज्ञ का अनुष्ठान करने की आज्ञा दी है जिसे त्याग कर मनुष्य दुःखी है। अतः सुख प्राप्ति के लिए जब शुभ कर्म करने का प्रश्न उठता है तब यजुर्वेद के मन्त्र मनुष्य को विश्व का सर्वश्रेष्ठ कर्म–यज्ञ ही करने की आज्ञा देते हैं। यज्ञ में बैठा ब्रह्मा पुनः अनेकों शुभ कर्म करने की शिक्षा वेदमन्त्रों द्वारा देता है। परन्तु यदि जब कोई विद्वानों से वेद ही नहीं सुनेगा, तब उसका भला कैसे होगा, वह तो हर हाल में दुःखी ही रहेगा।

यजुर्वेद मन्त्र 2/23 का भी प्रमाण है, जिसमें ईश्वर ने कहा कि हे मनुष्यों! तुमने मेरे यज्ञ त्याग दिए, मैंने भी (ईश्वर ने) तुम्हें सदा के लिए दुःख देने के लिए त्याग दिया। और यह कहने की आवश्यकता नहीं कि महाभारत काल के पश्चात् जबसे वेदाध्ययन एवं यज्ञादि कर्म छूटे हैं तब विश्व का मनुष्य चाहे धनवान् हो अथवा गरीब हो, अविद्याग्रस्त होने के कारण सभी दुःखी हैं।

व्यासमुनि जी महाभारत के वन पर्व में कहते हैं कि ज्ञानी पुरुष को भी संसार में कर्म अवश्य करना चाहिए। पर्वत और वृक्ष आदि स्थावर पदार्थ ही कर्म किए बिना जीवित रह सकते हैं, दूसरे लोग नहीं। कर्म ना करने वाले प्राणियों की कोई जीविका भी सिद्ध नहीं होती। अतः मनुष्य भाग्य पर भरोसा ना करे और कभी भी कर्म का परित्याग ना करे। सदा कर्म का ही आश्रय ले। भीख माँगने, कायरता दिखाने से अथवा केवल धर्म में ही मन लगाए रखने से धन की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती।

सामवेद मन्त्र 744 के अनुसार हमें पूजा का अनादि क्रम भी तोड़ने का अधिकार नहीं है, जिसमें ईश्वर ने उपदेश किया कि मनुष्य वेदानुसार वही पूजा करे जो उसके पूर्वज सृष्टि रचना के आरम्भ से आज तक करते आए हैं। आज के भौतिकवाद की चमक–दमक के दौर में यदि मनुष्य सामवेद के किसी भी तीन मन्त्रों की आहुतियाँ ग्यारह–ग्यारह बार प्रातः एवं साँय, डालता रहे, तब भी उसे कुछ ना कुछ सुखों की प्राप्ति अवश्य होगी।

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

मुख्य सम्पादक

वेद मन्दिर, योल (हि.प्र.)

जितना पराधीन होना है, वह सब दुःख और स्वाधीन रहना सुख है। (मनु स्मृति)

Sadhvi Geetanjali
Ved Mandir, Yol

A DOUBLE-EDGED WEAPON

HYPOCRISY

Vedas are the perennial source of knowledge which articulate our way of living according to the divine preach of God.

God preaches in Atharvaved mantra 7/27/1 that divine Vedas inspire us to do pious/auspicious deeds to lead a pure life, devoid of sins. Since the time we have distanced ourselves from Vedas, the virtues and pious qualities have also gone far from our personalities.

I remember to have read a meaningful symbolic story in this regard-

A deer fleeing from a hunter saw a wood cutter who was chopping wood. "There is a hunter chasing me. Please find me a place to hide", begged the deer. The wood cutter told the deer to hide inside his hut. It was not long before the hunter arrived. He asked the wood cutter if he had seen the deer. "Deer? No deer passed this way", said the wood cutter, pointing a finger at his hut.

Hunter however did not notice the gesture and left. Immediately deer crept out of the hut and turned to go. "Aren't you going to thank me for my help?" asked the wood cutter.

Nobody is immortal then why to feel sorrow for inevitable - Mahabharat

"I did want to thank you but then I saw you making gestures to hunter to indicate where I was", said the deer. ***"I could not help wondering whether you were friend or foe."***

Human-beings have been bestowed with millions of gifts and potentials by Almighty God. Why should we be driven by greed and selfishness instead of gratitude and humility? Selfishness leading to hypocrisy, are impediments to attaining perennial satisfaction and happiness. These negative thoughts when fester our mind, we degrade much below human level.

Vedas, the divine voice of God, carry a prayer in Atharvaved mantra 8/3/24, to be orated by the aspirant, with all his sincerity to God that Oh! (Agni) God; You (AdeveeheeDurevahaMayahaPraSahtey) annihilate the wicked and evil thoughts of mind. You alone inspire the aspirant to enhance his vedic knowledge along with pious deeds for complete destruction of evil nature including hypocrisy, selfishness, revengefulness and so on.

Further, in Atharvaved mantra 8/4/17 there is a heart-felt prayer to God that Oh! God if I poison anyone's life then I deserve to die. It is better to die than live a sinful life. Hence, may I be blessed to lead a pious life without causing bitterness in other's life. However, without any hard effort, daily worship, mere prayer is of no use. If we donot feel the depth of other's sufferings there would be no depth in us as humans. If we can't help others at least we should not hurt them.

May I also have an honour to quote ***Yogeshwar Swami Ram Swarup ji*** where he vividly explains the depth of hypocrisy in his ***Shayari-***

"What an unreliability of his thought,
Where his mind and heart different both."

I reiterate the fact that Doctors and counsellors at the CMC Hospital at Vellore have also carried out research on patients to prove that several physical ailments are directly related to emotional root cause. Resentment, enemity, hostility, revengefulness, hypocrisy, anger cause diseases related to heart, lungs, chest, stomach, intestine, ear, nose and throat.

It is beautifully stated in ***Atharvaved mantras 9/1/16-17*** that just as honey bees collect small quantities of nectar to be converted into best honey similarly the aspirant should patiently and consistently practises AshtangYog including pranayaam to harbour immense mental and physical power along with strength, vitality, splendour and invigoration within himself.

The extract of discussion is that one should live life on values and not greed. This would definitely not make life easy to live but in long run would lead us to our cherished goal of salvation. Remember, life is precious, so tap the wealth of Vedas to harness abundant, perennial joy. **VIV**

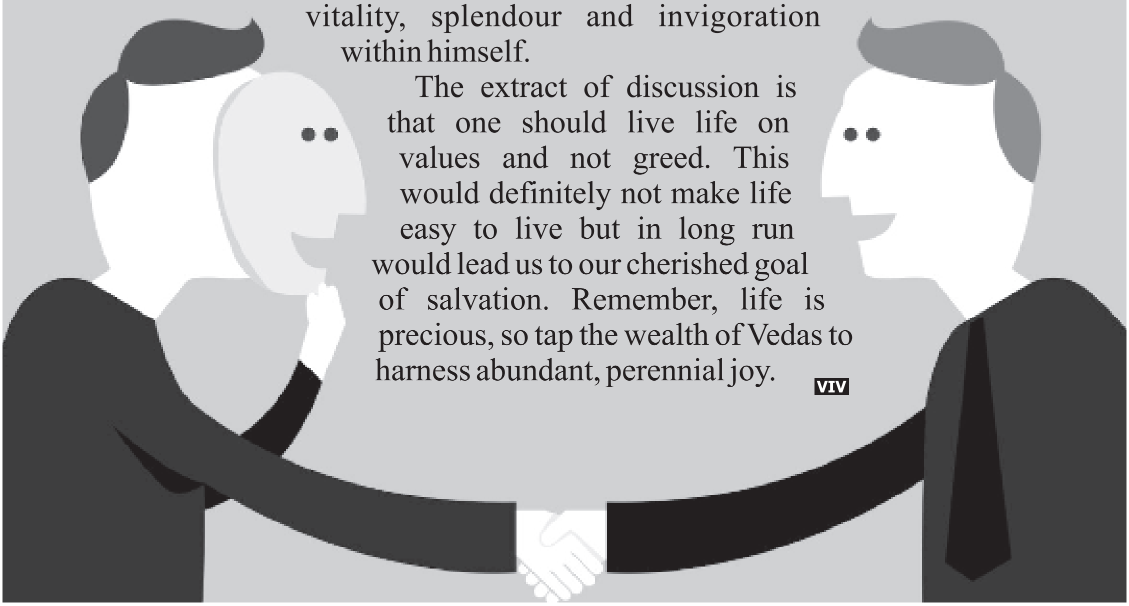

डॉ प्रवीन शर्मा
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
औषधिगुण शास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राजकीय
आयुर्विज्ञान महाविद्यालय
मण्डी स्थित नेरचौक, हिमाचल प्रदेश

बच्चों के साथ संवाद
व्यसन से दूरी का सरल मार्ग

व्यसन और मस्तिष्क

नशे की लत एक जटिल विकार है जिसका मुख्य लक्षण है अनिवार्य रूप से नशीले पदार्थों का प्रयोग। यद्यपि सभी नशीले पदार्थों का हमारी सोच एवं हमारे मस्तिष्क की कार्यप्रणाली पर एक समान प्रभाव होता है तथापि हर नशीले पदार्थ के हमारे शरीर पर प्रभाव की एक विशेषता होती है।

जब भी हम किसी आनंददायक पदार्थ का प्रयोग करते हैं तो उससे हमारे मस्तिष्क में डोपामिन नामक तंत्रिका प्रेषक पदार्थ का स्तर बढ़ जाता है जिससे हमें आनंद की अनुभूति होती है। हमारा मस्तिष्क इस अनुभूति को याद रखता है और उसकी पुनरावृत्ति की इच्छा करता है।

यदि हमें किसी पदार्थ की लत लग जाती है तो वह पदार्थ अन्य जीवनोपयोगी क्रिया कलाप जैसे खाना, पीना आदि जितना महत्त्वपूर्ण हो जाता है। हमारे मस्तिष्क में होने वाले ये परिवर्तन हमारी स्वतन्त्र सोच, निर्णय लेने की क्षमता, व्यवहार पर हमारे नियंत्रण, व्यायाम, एवं नशीले पदार्थ के बिना सामान्य अनुभव करने की क्षमता को प्रभावित करते हैं।

चाहे हमें सूंघने वाले पदार्थों की लत हो, चाहे हैरोइन की, चाहे शराब या दवाइयों की, उस पदार्थ के लिये अनियन्त्रित आकर्षण अन्य किसी वस्तु जैसे परिवार, मित्र, अपने भविष्य की चिन्ता और यहाँ तक कि अपने स्वास्थ्य एवं खुशियों से भी अधिक हो जाता है।

नशीले पदार्थ को प्रयोग करने की इच्छा इतनी अधिक हो जाती है कि हमारा दिमाग उस पदार्थ के प्रयोग को युक्तिसंगत मानना शुरू कर देता है और उसे छोड़ने की भावना को नकारना शुरू कर देता है। हम नशीले पदार्थ की कितनी मात्रा प्रयोग कर रहे हैं, इसका हमारे शरीर पर कितना प्रभाव होगा और इस प्रयोग पर हमारे नियंत्रण को, हमारा मस्तिष्क कम करके आँकने लगता है।

नशे की आदत के चेतावनी लक्षण

सामान्यत: नशेबाज़ अपने लक्षणों को छुपाते और अपनी समस्याओं को कम कर बताते हैं। यदि आपको ऐसा लगता है कि आपका कोई मित्र या सम्बन्धी नशे की आदत का शिकार हो चुका है तो निम्नलिखित चेतावनी लक्षणों को पहचानें—

नशे की आदत के शारीरिक लक्षण

१. लाल आँखें, सामान्य से बड़ी या छोटी पुतलियाँ।
२. भूख और नींद के चक्र में बदलाव, बहुत कम

क्रोध को त्यागने पर मनुष्य शोकरहित हो जाता है। (महाभारत-वनपर्व)

समय में वज़न का घटना या बढ़ना।
3. शारीरिक रूप सज्जा एवं व्यक्तिगत साज–सज्जा वाली आदतों का क्षय।
4. साँस, शरीर एवं कपड़ों से असामान्य बदबू।
5. हाथ काँपना, अस्पष्ट भाष्य एवं शारीरिक समन्वय का अभाव।

नशे की आदत के स्वभाव संबंधी लक्षण

1. कार्यस्थल या शैक्षणिक संस्थान से अत्यधिक अनुपस्थिति एवं कार्यकुशलता में कमी।
2. धन की बिना कारण अत्यधिक आवश्यकता एवं अन्य आर्थिक परेशानियाँ। उधार माँगना और चोरी की आदत।
3. गोपनीय एवं संदेहास्पद कार्यों में संलिप्तता।
4. मित्रों, पसंदीदा घूमने–फिरने के स्थानों एवं शौक में अचानक बदलाव।
5. बार–बार मारपीट, दुर्घटना और गैर कानूनी गतिविधयाँ

नशे की आदत के मनोवैज्ञानिक लक्षण

1. व्यक्तित्व एवं रवैये में असामान्य बदलाव।
2. मनोदशा में अचानक परिवर्तन, चिड़चिड़ापन, गुस्से का अचानक विस्फोट।
3. असामान्य अतिसक्रियता, आंदोलित व्यवहार, चक्कर आना।
4. प्रेरणा की कमी, ऊर्जा विहीनता।
5. बिना किसी कारण डरा हुआ, चिंतित एवं पागल प्रतीत होना।

जब आपके किसी प्रियजन को नशे की समस्या हो

यदि आपको संदेह है कि आपके बच्चे या परिवार

के किसी सदस्य को नशे की समस्या है तो यें कुछ बातें हैं जो आप कर सकते हैं।

1. चुप मत रहिये, बोलिये– अपनी चिंता के बारे में उस व्यक्ति से बात कीजिये और निर्णायक बने बिना अपनी मदद और समर्थन का प्रस्ताव कीजिये। जितनी जल्दी नशे की लत का उपचार हो उतना ही उत्तम है। अपने प्रिय बन्धु बान्धव के सबसे बुरी स्थिति में पहुँचने की प्रतिक्षा मत कीजिये। वह प्रियजन जिसके व्यवहार से आप चिंतित हैं, उदाहरण देकर बहाने बनायेगा। और इन्कार करेगा इसके लिए तैयार रहें।

2. अपने आप का ध्यान रखिये– किसी और की नशे की समस्या में इतना मत उलझ जाइये कि अपनी ही ज़रूरतों की उपेक्षा करने लगें। सुनिश्चित करें कि आपके पास बात करने के लिए लोग हों, जिनका आप आवश्यकता पड़ने पर सहारा ले सकें, और सुरक्षित रहें। अपने आप को खतरनाक स्थिति में न डालें।

3. अपने आप को दोषी समझने से बचिये–आप मादक द्रव्यों के सेवन की समस्या वाले व्यक्ति को सहारा दे सकते हैं और उसे इलाज के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं परन्तु आप एक व्यसनी को बदलने के लिए दबाव नहीं

लोभ को त्याग कर मनुष्य सुखी हो जाता है। (महाभारत-वनपर्व)

डाल सकते। आप अपने प्रियजन के निर्णयों को नियंत्रित नहीं कर सकते। नशे की लत से ठीक होने के रास्ते का एक महत्वपूर्ण कदम है कि व्यक्ति अपने कार्यों की जिम्मेदारी स्वीकार करे।

व्यवसायिक मदद की तलाश कीजिये

यदि आपको लगता है कि आपके चिन्तित होने या संवाद करने के प्रयासों का उचित प्रभाव नहीं हो रहा है तो आप पेशेवर सहायता की खोज करें।

परन्तु ऐसा मत करें

★ सजा, धमकी, रिश्वत या उपदेश देने का प्रयास मत करें।

★ अपना बलिदान देने का प्रयास करने या भावुक याचिकायें करने से बचे क्योंकि वें अपराध की भावना को बढ़ा सकती हैं और नशे का प्रयोग करने के लिए विवश कर सकती हैं।

★ नशा करने वाले के लिए बहाने बनाना, उसकी आदत को छुपाना या उसके व्यवहार के नकारात्मक परिणामों से उसका बचाव करने का प्रयास न करें।

★ उनकी ज़िम्मेदारियां खुद उठाकर, उन्हें किसी महत्व और गौरव की भावना के बिना छोड़ देना अनुचित है।

★ नशीले पदार्थों को छुपाना या उन्हें फेंक देना अस्वीकार्य है।

★ जब वह व्यक्ति नशे में हो तब उसके साथ बहस कभी मत करें।

★ नशा करने वाले के साथ खुद भी नशा करने की सम्भावना से बचें।

★ दूसरे के व्यवहार के लिए खुद को दोषी या ज़िम्मेदार मत मानें।

अपने बच्चे की स्थान या स्कूल में परिवर्तन की महत्त्वपूर्ण समयावधि में अच्छे विकल्प चुनने में मदद करने के लिए आपको निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिये—

1. यह बात साफ करनी चाहिये कि आप नहीं चाहते कि वह शराब, तंबाकू, मैरिजुआना और अन्य नशीले पदार्थों का सेवन करे।

2. पता लगाना चाहिए कि क्या वह सचमुच में शराब, तंबाकू और अन्य पदार्थों के दुष्प्रयोग के परिणाम को समझता है।

3. उसके मित्रों से जान—पहचान करने के लिए उसे विद्यालय के बाद क्रियाकलापों, खेलों, पुस्तकालय और फिल्में देखने के लिए छोड़ने और लेने जाना चाहिये। इस बात से संवेदनशील रहते हुए कि वह स्वतन्त्र महसूस करना चाहता है, उसके मित्रों के माता—पिता से अक्सर जाँच कर यह सुनिश्चित करें कि वें भी नशा—विरोधी दृष्टिकोण रखते हैं।

4. यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आप उसके ऑनलाइन दोस्तों को जानते हैं और साथ में उसकी अन्य ऑनलाइन गतिविधियाँ जैसे

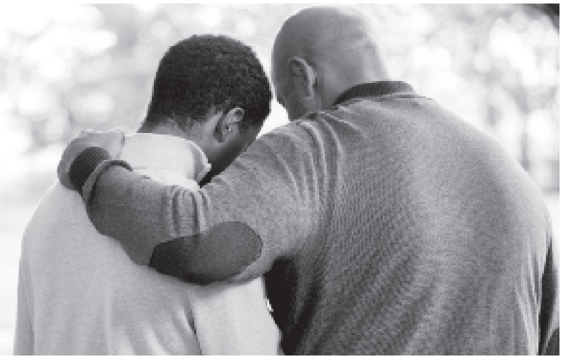

जगत् अज्ञान-तमोगुण के कारण प्रकाशित नहीं होता। (महाभारत-वनपर्व)

कि उसके द्वारा देखी जाने वाली वैबसाइट, वह किसे ई—मेल करता है, किससे बातचीत करता है, तुरन्त संदेश भेजता है और उसके फेसबुक प्रोफाइल आदि की जानकारी रखें।

5. उसके विद्यालय की ऐसी गतिविधियों में हिस्सा लेना चाहिए जिनसें आप उस पर नज़र रख सकें।

6. बच्चों की स्कूल के बाद गतिविधियाँ बड़ों की देखरेख में होनी चाहिए। जो बच्चे स्कूल के बाद बड़ों की देखरेख के बिना रहते हैं उन्हें गतिविधियों की अनूसूचि और घर के काम पूरा करने के लिए देने चाहिएं। उनके व्यवहार को सीमित रखना चाहिए और ऐसी नीति बनानी चाहिये कि आप उन्हें कभी भी दूरभाष पर सम्पर्क कर सकें।

7. अपने बच्चों के लिए ऐसी परीस्थिति को छोड़ना आसान बनाना चाहिए जहाँ पर शराब, तंबाकू और अन्य नशीले पदार्थों का उपयोग किया जा रहा हो।

8. जिन बच्चों के घर पार्टी होने जा रही हो उनके माता—पिता को फोन करके आश्वासन लें कि कोई मादक पेय व अवैध पदार्थ पार्टी में नहीं होंगें।

9. निषेधाज्ञा लगायें और उन्हें पालन के लिये बाध्य करें।

10. अपने बच्चों के साथ उनके अनुभवों के बारे में, खुले संवाद को प्रोत्साहित करें।

निगरानी एक प्रभावी तरीका है जिससे आप अपने बच्चे की नशीले पदार्थों से मुक्त रहने में सहायता कर सकते हैं। भले ही आपको संदेह न हो कि आपका किशोर नशीले पदार्थों का उपयोग कर रहा है फिर भी यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य है।

अपने बच्चे की निगरानी की मूल बातें

किशोरावस्था में बच्चे को निगरानी का सुझाव बुरा लग सकता है परन्तु वास्तव में यह एक बहुत सरल उपाय है जिससे बड़े—बड़े काम बन सकते हैं। आपको पता होता है कि आपका बच्चा पूरा समय कहाँ है खास तौर पर स्कूल के बाद। आप उसके दोस्तों को जानते हैं, और आपको उसकी योजनाओं और गतिविधियों का पता होता है। अपने किशोर के दैनिक कार्यक्रमों की जानकारी रखकर, आप अपने बच्चे को नशीले पदार्थ मुक्त रखने में महत्त्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं। जिन बच्चों की नियमित रूप से निगरानी नहीं की जाती उन बच्चों की नियमित रूप से निगरानी में रह रहे बच्चों की तुलना में नशीले पदार्था प्रयोग करने की संभावना चार गुणा अधिक होती है।

एक संतुलन कायम करें

क्योंकि निगरानी, आपके बच्चे की स्वतन्त्र रहने की इच्छा से टकराव उत्पन्न करती है, यह संभावना है कि वह, उसके दैनिक ठिकाने का विवरण जानने के आपके प्रयासों का विरोध करे। पर इस विरोध को अपने लक्ष्य की बाधा न बनने

वेद मार्ग पर चलकर मृत्यु जीतो- न अन्य पन्थाः (यजुर्वेद 31/18)

दें। यदि आप इस तरीके को उसको नियंत्रित करने के साधन के रूप में प्रस्तुत न कर, यह जानने के साधन के रूप में दर्शाएं कि वह कैसा है और क्या करना चाहता है तो वह इस विचार को अधिक आसानी से स्वीकार कर सकता है।

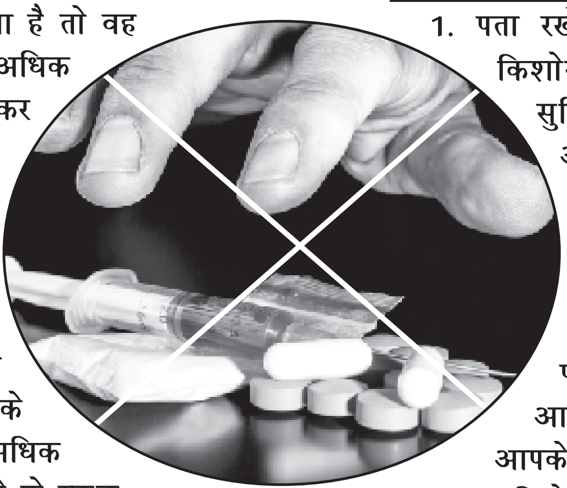

स्कूल के बाद का समय निगरानी के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण समय है। बच्चे इन कुछ घंटों की अवधि में नशीले पदार्थों के दुरुपयोग के सबसे अधिक खतरे में होते हैं। बच्चे के स्कूल में यह पता करने के लिए संपर्क करें कि इस समयावधि में वह बड़ों की देखरेख में कौन सी गतिविधियों में भाग ले सकता है। आप उसे युवा समूहों, कला या संगीत कार्यक्रम, संगठित खेल, सामुदायिक सेवा या शैक्षिक क्लबों के साथ शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करें। अपने बच्चे से पूछते रहें और सुनिश्चित करें कि वह अपने द्वारा चुने गए कार्यक्रम में वास्तव में जा रहा है।

निश्चित रूप से, निगरानी का अर्थ यह नहीं हैं कि आप अपनें बच्चे की अल्मारियाँ टटोलनें लगें। जैसे–जसै बच्चे बड़े होते हैं उनकी एकांत की आवश्यकता बढ़ती जाती है और यह बिल्कुल ठीक है। परन्तु यदि नशीले पदार्थों के उपयोग के संकेत दिखने लगें तो निगरानी और गोपनीयता के बीच संतुलन में बदलाव कर सकते हैं। यह याद रहे कि जब हस्तक्षेप करनें का समय आ जाये तब बच्चे की एकांत की आवश्यकता के विषय पीछे हो जाते हैं।'

निगरानी के चार मुख्य नियम

1. पता रखें कि आपका बच्चा या किशोर हर समय कहां है। यह सुनिश्चित करें कि वह जाने और समझे कि आपके पूछने का कारण प्यार है, विश्वास की कमीं नहीं।

2. अपने किशोर के सभी मित्रों का व्यक्तिगत रूप से पता करें। उनके चेहरे और आवाजें पहचापनें। उन्हें आपके साथ घूमने के लिए मजबूर किये बिना, जब संभव हो उनसे बातचीत करें।

3. पता करें कि आपका बच्चा अपना दिन व्यतीत करने के लिए क्या योजना बना रहा है। रात के खाने का समय इस विषय पर चर्चा का अच्छा समय है। यह पूछना एक अच्छा तरीका है कि कल आप क्या कर रहें है?

4. अपने बच्चे का व्यस्क पर्यवेक्षक के बिना बिताया जाने वाला समय सीमित करें। किशोरों और किशोर होने वालों के लिए स्कूल के बाद बिताये जाने वाले घंटे सबसे खतरनाक होते हैं। साथियों का अधिक दबाव और नीरसता, स्कूल के बाद नशीले पदार्थों के प्रयोग की संभावना को बढ़ा सकता है। यदि आप या दूसरा व्यस्क जिस पर आप विश्वास करते हैं आपके बच्चे के लिए घर पर नहीं रह सकते तो अपने किशोरवय के लिये स्कूल के बाद के ऐसे कार्यमों, जिनमें वह भाग ले सकता है, का पता करें। VTV

क्रोध, हर्ष, अभिमान, लज्जा, अपने को पूज्य समझना, इन दोषों से जो दूर है, वही पण्डित है। (महाभारत-उद्योगपर्व)

शरीर भस्म होने योग्य है

ऋचा कौशिक
इंजीनियर (बी.टैक.)

कई वर्ष पहले मैंने किसी पुस्तक में एक दृष्टान्त पढ़ा था। कहते हैं किसी वन में एक योगी अपने शिष्यों सहित वेदाध्ययन एवं योगाभ्यास कार्य में रत रहते थे। उदर पोषण के लिए कन्द–मूल, फल और नदियों का स्वच्छ जल पीकर सन्तुष्ट रहते थे। झोंपड़ी में तिनकों की शय्या में विश्राम तथा सन्तोष, धैर्य और शांति की साक्षात् मूर्ति थे। योगीराज का एक शिष्य बहुत चपल था। उसका हृदय विचलित एवं बार–बार सांसारिक कामों आदि में उलझा रहता था। एक दिन उसने गुरुजी से अपने मन की बात कह दी कि महाराज कभी–कभी नगर की भी सैर करा कीजिए, इत्यादि। गुरुजी की ख्याति दूर–दूर तक थी। परन्तु वह कभी सांसारिक विचारों, नगर में घूमने–फिरने, राजमहल में आने–जाने की इच्छाओं/तृष्णा से रहित थे। अत: शिष्य को कहा कि, ''भाई, मैं तो कहीं जाता नहीं, तेरी जैसी इच्छा है, वैसा कर।'' ऐसा सुनकर शिष्य अकेला ही नगर की सैर करने चल पड़ा। इधर–उधर महलों की शोभा देखते–देखते, उसने देखा कि एक युवती खड़ी बाल सुखा रही है। बस कामदेव के बाणों से छिदा हुआ उस युवती पर लोट–पोट हो गया परन्तु बेबस था और साँयकाल आश्रम को लौट आया। गुरुजी ने चेहरा देखते ही सब जान लिया और हँसकर कहा– ***''सच–सच बता कि क्या नगर का काँटा तेरे हृदय में लग गया?''*** शिष्य ने तब सब कुछ सच–सच कह दिया। गुरुजी ने आश्वासन दिया और कहा कि घबराओ मत, यह कोई बड़ी बात नहीं है, तुम पता बताओ और वह

सन्तोष उत्तम सुख परन्तु मोक्ष सर्वोत्तम सुख है। (योग शास्त्र)

स्त्री यहाँ उपस्थित होगी।'' शिष्य के पता बताने पर गुरुजी ने अपने एक चेले को एक पत्र, उस स्त्री के पति के नाम, लिखकर भेज दिया। स्त्री का पति गुरुजी का भक्त था। गुरुजी ने पत्र में लिखा था कि हमारे ऊपर विश्वास करके अपने स्त्री को एक रात के लिए आश्रम में ले आओ। उसके पतिव्रत धर्म के, हम उसके पिता के समान रक्षक हैं। गुरुजी के ऊपर दूर—दूर तक सबको पूरा विश्वास था। स्त्री का पति अपनी पत्नी सहित आश्रम में उपस्थित हो गया। गुरुजी सेठ को अलग बैठा कर स्त्री को लेकर शिष्य के पास गए और कहा कि यह देवी तुम्हारे पास है, तू जो चाहे सो कर। परन्तु इतना ध्यान रखना कि प्रात:काल सूर्य निकलते ही तेरी मृत्यु हो जाएगी। उस स्त्री को गुरुजी ने पहले ही समझा दिया था कि घबराना नहीं, तुम्हारे पतिव्रत धर्म पर कोई आँच नहीं आएगी। स्त्री बैठी रही। उधर मृत्यु के भय से शिष्य चिंतित हो गया और उसके हृदय से समस्त काम वासना नष्ट हो गई। सारी रात्रि यही सोचता रहा कि प्रात:काल मेरी मृत्यु हो जाएगी और इस प्रकार यही चिंतन करते—करते, समस्त रात्रि व्यतीत हो गई। प्रात:काल गुरुजी के आने पर शिष्य ने उनके चरण छुए, गुरुजी ने कहा— ***''कहो भोग तृष्णा को बुझा चुके?''*** शिष्य कहने लगा— ***''महाराज कैसा भोग और कैसा विलास?मैं तो रात भर मृत्यु के भय से चिंता में डूबा रहा। गुरुजी ने कहा— ''मूर्ख! मुझे तो यही पता नहीं कि मृत्यु कब आ जाए।*** तो मैं तेरे साथ योगाभ्यास छोड़कर कैसे सैर—सपाटे को निकलूँ। याद रख भोग—विलास में फंसे रहना और परलोक की तैयारी में वेदाध्ययन, यज्ञ, अग्निहोत्र एवं योगाभ्यास आदि साधना ना करना, इस लोक एवं परलोक, दोनों को नष्ट कर देना है। मनुष्य का शरीर वेद मार्ग पर चलकर मोक्ष प्राप्त करने के लिए मिला है। परन्तु भोग—विलास में फंसा हुए मनुष्य सोचता ही रह जाता है कि कल से साधना करूंगा या बुढ़ापे में साधना कर लूंगा और ऐसा सोचते—सोचते ही मृत्यु आ जाती है और हम इसके लिए तैयार नहीं रहते। जीवात्मा असंख्य योनियों के लिए भटक जाती है और दु:खों के समुद्र में गोते लगाती रहती है। मनुष्य यदि यह विचार सदा रखे कि मृत्यु कभी भी आ सकती है तब वह मनुष्य भोगों में लिप्त नहीं हो सकता। ऐ शिष्य! यदि तू भोग में फंस जाता तब तू ब्रह्मचर्य आदि धर्म से गिर जाता और

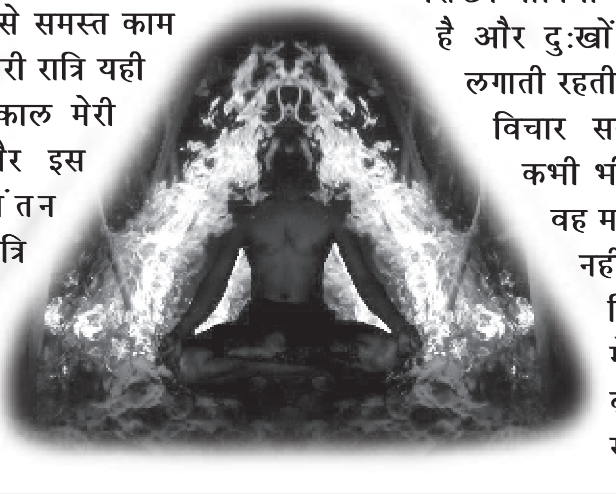

धन से धर्म की वृद्धि होती है। (महाभारत-शांतिपर्व)

यही तेरी धार्मिक मृत्यु होती। अब तूने मृत्यु की चिन्ता करके भोगों से उदासीनता दिखाई है इसलिए स्थिर होकर वैदिक साधना कर और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर।

संपादक के विचार

यह ईश्वर कृपा ही है कि हम जीवात्माओं को मनुष्य का सुन्दर शरीर मिला है। इस मनुष्य शरीर से ही वेद मार्ग पर चलकर पुरातन एवं नूतन ऋषियों—मुनियों, हरिश्चंद्र, ययाति एवं असंख्य राज—ऋषियों तथा अन्य जनता ने ईश्वर को प्राप्त करके परम सुख प्राप्त किया। याद रखें, जीवात्मा शुद्ध, चेतन तत्त्व है, जो हम हैं और जीवात्माओं से अलग जड़ एवं नाशवान् पँच—भौतिक शरीर है। ***शरीर को पंचौदनम् अर्थात् धन, मकान—दुकान, गृहस्थादि का सुख तथा भोजन आदि सभी भौतिक पदार्थ—चाहिएँ परन्तु हम जीवात्माओं को तो केवल एक ब्रह्मौदनम् अर्थात् वेद का ज्ञान चाहिए।*** यह सम्पूर्ण वेदों का ज्ञान ही जीवात्मा का भोजन है अन्यथा अमीर अथवा गरीब, कोई भी हो, इस ब्रह्म ज्ञान के अभाव में सभी दु:खी रहते हैं। अत: हमें ईश्वर की आज्ञा पालन करके बचपन से ही, किसी विद्वान् के आश्रय में रहकर, वेदों का ज्ञान प्राप्त करते रहना चाहिए जिससे पूर्व के ऋषियों—मुनियों, राज—ऋषियों की भांति हम भी अपना जीवन सफल करें। वे विभूतियाँ भी तो हमारी तरह साधारण जन्म लेकर आईं परन्तु बाल्यकाल से ही ऋषियों के अधीन होकर ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास के कर्तव्यों को वैदिक परंपरा के अनुसार पूर्ण करते हुए, मोक्ष पद को प्राप्त हो गईं। फिर हम क्यों नहीं मोक्ष पद प्राप्त कर सकते?

याद रहे, किया हुआ कर्म कभी मिथ्या नहीं होता। फल अवश्य देता है। पाप करोगे तो फल दु:ख के रूप में और यदि पुण्य करोगे तो फल सुख के रूप में अवश्य भोगना पड़ेगा। फिर वेद मार्ग पर ना चलकर यदि हम वेद विरुद्ध पाप कर्म ही करते रहे तब ईश्वर के विधान के अनुसार हम जीवात्माएँ मनुष्य से नीच असंख्य योनियाँ—कुत्ता—बिल्ली, साँप—बिच्छु अर्थात् पशु—पक्षी, कीट—पतंग जो हैं, उनका शरीर पाकर सदा दु:खों के सागर में गोते लगाती रहेंगी। ***अत: यहाँ समझना चाहिए कि जीवात्माओं का कर्मानुसार एक शरीर त्यागकर दूसरे शरीर में जाने का क्रम अनादि एवं अविनाशी है। इसलिए मनुष्य योनि को संभाल कर संभल—संभल कर संसार में कदम रखकर वेद मार्ग पर चलें, वेद में कहे शुभ***

परमेश्वर का चारों वेदों में निर्णय-प्रतिदिन वेदों का स्वाध्याय, यज्ञानुष्ठान करो। (महाभारत-शांतिपर्व)

कर्मों को ही करें। इसमें ही कल्याण है।

सनातन परंपरा है कि शिष्य अथवा शिष्या वेद ज्ञान को प्राप्त करने के लिए आचार्य के पास जाकर कहते हैं—

''ब्रह्मचर्यमागाम् ब्रह्मचार्यसानि''

अर्थात् मैं ब्रह्मचर्य धारण करने, शिक्षा ग्रहण करने और ब्रह्मचारी बनने के लिए आपके समीप आया/ आई हूँ। वस्तुतः वैदिक शिक्षा प्राप्ति की नींव (आधार) ब्रह्मचर्य ही कही है। २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य अनिवार्य कहा है। गृहस्थ—आश्रम में प्रवेश उत्तम सन्तान प्राप्ति के लिए किया जाता है। परन्तु जब ब्रह्मचर्य धारण करके साधक गुरु के आश्रम में आता है तो उसका कभी भी मन चंचल नहीं होना चाहिए। ऋचा बेटी ने इस कथा में यही ज्ञान देने का प्रयास किया है कि उस गुरु के शिष्य की वृत्ति चंचल हो गई और नगर में घूमते—घूमते उसकी दृष्टि किसी सुन्दर स्त्री पर पड़ गई। फलस्वरूप उसकी पाप रूप काम वासना जाग गई। उसके गुरु ने अपनी योग विद्या की शक्ति से उसका समझाया कि यह शरीर तो क्षण भंगुर है और ब्रह्मचर्य धारण करके ईश्वर प्राप्ति के लिए है। मृत्यु को तूने हमेशा याद नहीं रखा। कहा भी है—

''गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्''

अर्थात् मृत्यु बाल पकड़े हुए है। अतः ऐ मनुष्य! तू धर्म का आचरण कर। 40वें अध्याय यजुर्वेद में भी कहा कि यह शरीर वायु, अग्नि, जल, आकाश, पृथिवी; इन पाँच तत्त्वों से बना है। मृत शरीर के यह पाँचों तत्त्व अपने कारण से मिल जाते हैं। इसलिए शरीर को ***''भस्मान्तम् शरीरम्''*** कहा है। अर्थात् शरीर भस्म होने योग्य है। आश्चर्य यही है कि जीव प्रकृति के पदार्थों में आकर्षित होने के कारण (काम—क्रोध, मोह—ममता आदि में फंसा) अपने अविनाशी, शुद्ध, चेतन स्वरूप को भूल गया और वेद—विरुद्ध कर्म करके, नाशवान् शरीर का अभिमान करके, भीषण दुःखदायी मृत्यु को प्राप्त होकर, भिन्न—भिन्न योनियों में भटकता दुःख पाता है। बुद्धिमान पुरुष विद्वान् का आश्रय लेकर, वेद का ज्ञान प्राप्त करके तथा वैदिक शिक्षा को आचरण में लाकर, दुःखों का नाश करके, मोक्ष पद प्राप्त करके जीवन सफल बना देते हैं। VIV

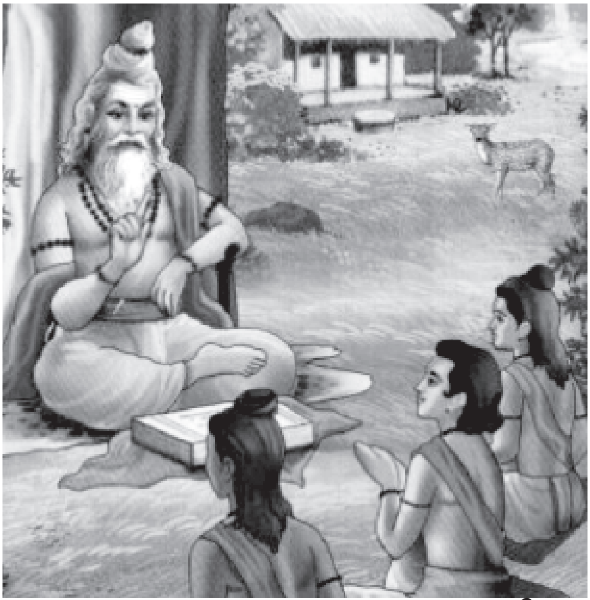

धन के बिना तो लोगों का जीवन–निर्वाह ही नहीं हो सकता। (महाभारत–शांतिपर्व)

Are we creating a generation of over-pampered children ?

Sapna

Generation gap has always been there between parents and their children. Parents stick with their ideals and methods that they were brought up with while children scoff at those methods terming them outdated or primitive. There has been a tussle between the two since time immemorial and it is natural to have difference of opinions, which is considered healthy for relationships to thrive. However, in the modern world that we are living in, this pious relationship between parents and their wards has undergone a sea change. Even young children as old as three-four have strong views on everything and often they are found to be not listening to their parents or answering back. ***Gone are the days when an angry look from their father was enough to make children cower away.***

It is very normal for one to hear mothers complaining about their children to each other that ***,"they don't listen to us".*** But these are the same mothers who are over-pampering their kids with expensive gifts, treats, travel to exotic locations. These days when everything is available at the click of your fingers literally parents make up for not spending enough time with their children pandering to their smallest of demands with great alacrity. Most children from middle class families where both parents are working have their wishes fulfilled at once. ***As a result kids these days do not value money or the hard work that goes behind earning money. For them money comes from ATMs and they can buy anything online by their parents' credit cards.***

We are creating a world where kids are self-obsessed and selfish. They don't really care about others. This is the reason that we are hearing about so many incidents of crimes where small children are involved.

There is an urgent to need to change this by teaching our children right values like love, kindness, humanity among other virtues. Parents should spend quality time with their

children not just splurge on them. ***A very important aspect here is spirituality. Children should be taught very early about spiritualism to make them good citizens of tomorrow.*** This time of polarization when intolerance is on the rise and people are being killed in the name of religion, there cannot be a right time to make our children spiritually inclined.

There is a problem of over protectiveness that is also a cause for concern. Parents are constantly hovering around their children if not physically then through helpers, or through cameras. Give your child a break. Let them lead normal lives. While it is true that the world is not a safe place like it used to be but we have to let our children learn to cope. What is important is that parents should be there when they need you.

Further insight by the Editor

I appreciate that daughter Sapna has taken the subject of children about their betterment, which is of utmost need in present scenario. It is also universally said that children are the future of their nation, which thrives in the lap of the mother. Therefore, it is the earnest duty of the Government to look after the mothers as well as children, so that they become learned. We must be aware of the fact that Indian culture is totally based on four Vedas, which emanate directly from God. So, we must value the God given knowledge and not of human-being vide ***Rigved mantras 10/109/1, 2.*** In the beginning of creation, God first gives vedic knowledge to four Rishis then it goes to a person named Brahma, alone. Mantra states that right from Brahma, the eternal tradition of spiritual master **(guru)** and disciple **(shishya)** starts. It is sad that this vedic tradition has been oversighted by us due to non-study of Vedas, mainly by politicians who have been entrusted with duties in vedas to first learn and then make arrangement to spread vedic knowledge to children-

Be hard worker and not lazy- Swamiji.

public, for which in previous yugas tradition of gurukuls started. This resulted in the tradition of making good charactered children, who in the young age, used to shoulder the responsibility of making the nation strong.

In this way, there good quality of character ***(like having vedic spiritualism, maintaining Brahmacharya, impartiality, justice, pure intellect by gaining vedic knowledge from Rishi-Munis, looking after public like their own sons and daughters, being vegetarian and non-addict etc.)*** was mainly the reason for providing vedic moral education to their children from learned acharya of vedas to make the nation strong, which is not being oftenly seen in the present times and hence the critical situation of nation.

For example- There is vedic preach that acharya should perform the ***upnayan sanskaar*** of boys and girls between the age of 8-12 years after which the boys and girls are called Dwij i.e. second birth. This sanskaar is eternal and everlasting which increases their age. Secondly, the main purpose of performing the sanskaar is to make the purest loving relation between acharya and disciple, where learned of Vedas, the acharya starts preach of Vedas to build character of disciples. You see, in ***Valmiki*** as well as ***Tulsikrit Ramayan,*** the upnayan sanskaars of Sri Ram and his brothers were performed by Guru Vasishth.

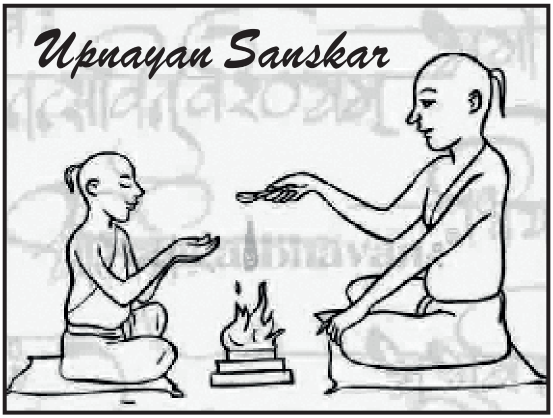

But it is sad that we only study Ramayan and other spiritual books, remember them, deliever lectures to others also but the education and teachings preached therein are not held in life. Therefore the study of those spiritual books goes in vain.

You see, since the time when the sixteen vedic sanskars like Upnayan sanskaar have been neglected, it has resulted in great loss in maintaining the good character of children because following teachings of upnayan sanskaar are not held in life by our children, nowadays-

1.) Meaning and divine qualities of God, Vedas and acharya, respect of acharya, parents and elders and to behave well with others.

2.) To hold Yajyopaveet (janeu) which brings the purest relation of disciple with acharya to begin to learn the

divine qualities etc.

3.) To learn to be always away from the bad society.

4.) To maintain Brahmacharya which enables the student to overcome bad society, abuses, tauntings, to be away from immoral activities, to gain physical as well as mental power, to concentrate over studies, to increase memory, to be always sweet spoken and to gain several other divine qualities.

Upnayan sanskaar preaches to the parents to ensure that their children take lot of water and nutritive food. Because Vedas tell that in early age, the water is equivalent to mother's milk, in providing energy and blesses us with life.

In Upnayan sanskaar, the child is preached to remember the Gayatri mantra which enlightens intellect with knowledge and sorry to write here that mostly the students of India are not aware of these facts.

The child is called **Dwij** i.e. second birth and is blessed with Jaayemanaha Shreyanbhavti i.e. live long and obtain the best birth from the earlier first birth taken from the parents. In the second birth, the Acharya becomes his spiritual father and vedas become his ved mata. So, this is called spiritual birth. In this way, the child attains the best stage of human-being. In the sanskaar the child

obtains the divine blessings of several learned acharyas for long, happy life and to serve the society/nation to the best.

The vedarambh sanskaar (i.e. to start to gain vedic education) is also performed along with Upnayan sanskaar which is most important and has been neglected nowadays, hence the problem in students.

We must pay our attention towards Manu Smriti which states-

"Janamana Jayetey Shudraha,

Sanskaaraat Dwij Uchyatey."

i.e. after taking birth from parents, all human-beings are not learned due to lack of vedic knowledge but when vedic sanskaars like Upnayan sanskaars etc. are performed then the human-beings are called Dwij i.e. second birth, as told above . Vedic culture states that without performing sanskaars and taking vedic knowledge, man cannot be a man.

It shall not be out of place to mention here that the responsibility of

the parents cannot be oversighted in spoiling their children. It is a fundamental law of vedas that to maintain Brahmacharya, get physical and mental power and also to be illfree with purest intellect, the parents will have to check that the children donot listen to sensual stories, donot contact with bad charactered people, donot think about sensual subjects, the parents will have to see that children do not remain alone, they must avoid talking to opposite sex in lonely places and avoid touching them.

Those children only become learned and good charactered whose parents punish them on their faults while teaching them. In this connection, Pannini Muni states in his vedic grammar-

"Samritaihee pannibhirghnanti gurvo na vishokshitehey,

Laalanaashrayinno doshaastaadanashrayinno gunnaha."

that the parents and learned acharya who punish the children on their faults, then think that they are giving ambrosia to their children. On the other hand, the parents who pamper their children, deal with them in emotional love and fulfil their unnecessary monetary demands, it means they are poisoning the children to destroy their character and life. Children must be educated to love, respect and serve the parents.

Similarly, parents must preach to the children to be away from even thinking about theft, laziness, spending fun, to be away from addiction, violence etc. They should never tell lie.

So, such parents are enemies of their children, who do not preach them well. Infact, by ignoring eternal vedic culture, we, the citizens of India which is the land of Rishi-Munis, Yogis etc; have committed self-destruction.

In the end, I would like to write that

the Educational institutes are the only source of gaining the knowledge to build the character of children who further make the nation strong. ***So, if our Government provides the facilities right from schools to universities to provide a period even of about half an hour wherein vedic education is provided, I am sure that the problem of nowadays of bad behaviour of children, which is raised by Sapna daughter, may be overcome.*** VIV

He is God Who creates and holds us- Yajurved mantra 40/8.

विद्वानों के संग से जाना नाम की महिमा को

अंजना दीवान (इन्डोनेशिया)

नाम जपन दा रखया ई केड़ा वेला मनवा
सतगुरु कैंदे तेरा नाम जपन दा वेला मनवा

यह एक भजन की पंक्तियाँ हैं और गुरु जी (स्वामी राम स्वरूप जी) के साथ जब भी हम सब यह भजन गाते थे और इस भजन से मुझे यही समझ में आता था कि ***नाम जपने के लिए कुछ समय ज़रूर निकालना चाहिए*** क्योंकि भजन में हम कह रहे हैं कि बचपन हमनें खेलकूद में, जवानी गृहस्थ और परिवार के पालन–पोषण में, बुढ़ापे में रोगों ने घेर लिया और नाम जपने के लिए कभी समय ही नहीं निकाल पाए और इसी तरह एक दिन पंख पखेरू उड़ गए। सच पूछो तो जब पिताजी ने हमें दीक्षा दिलाई थी, बिलकुल भी ज्ञात नहीं था कि दीक्षा क्यों ली जाती है और क्यों हमें उस नाम का जाप हर रोज़ ज़रूर करना चाहिए। लेकिन एक बात थी, हमारे पिताजी हम सब बहन–भाईयों को नित्य सुबह–शाम ***'नाम सिमरन'*** के लिए ज़रूर बैठाते थे और साथ में यह भी कहते थे कि जो नाम नहीं जपता उसकी जीवात्मा भटकती रहती है, उसकी गति नहीं होती है, उनकी यह बात हमें समझ में तो नहीं आती थी लेकिन एक अच्छी बात यह हुई कि दोनों समय 'नाम' जपने की हमारी आदत बन गई।

स्वामी जी अक्सर किसी को भी जल्दी से दीक्षा देने के लिए राज़ी नहीं होते थे और जब किसी को दीक्षा देने के लिए हामी भरते थे तो हम सब को बहुत ही खुशी होती थी, इसलिए कि जिन्होंने पहले से ही दीक्षा ली है, गुरुजी उनको भी साथ बैठने के लिए आज्ञा दे देते थे। ईश्वर कृपा से पिछले कई सालों में कई बार हमें यह अवसर प्राप्त हुआ और उस के लिए हम ईश्वर के कृतार्थ हैं। हर बार ऐसे लगता था जैसे पहली बार ही स्वामी जी के मुख से यह 'नाम' सुन रहे हैं। ***स्वामी जी से हीं हमने जाना कि दीक्षा का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है और क्यों हमें हर रोज़ दीक्षा में दिए नाम का सिमरन करना चाहिए।***

स्वामी जी ने बताया कि जब कोई

क्षमा, समर्थों का भूषण है। (महाभारत–उद्योगपर्व)

योगी आप को दीक्षा देता है तो ईश्वर कृपा से आप ***द्विज*** हो जाते हो अर्थात् आप का दूसरा जन्म होता है। पहला जन्म जो माता–पिता से होता है, वह संसारी होता है और जब कोई आचार्य हमें दीक्षा देता है तो वो ***आचार्य हमारा आध्यात्मिक पिता कहलाता है और वेद हमारी माता।*** और वो आचार्य पाँच जन्म तक हमारा साथ देता है। यह वेद वाक्य हैं, जबकि माता–पिता सिर्फ इसी जन्म के ही साथी हैं। आचार्य से हमने यह भी जाना कि उस आचार्य ने अनेक जन्मों में उस 'नाम' का तप किया होता है और उसी तप से ही उसे सिद्धी प्राप्त होती है अर्थात् ईश्वर की प्राप्ति होती है और उस 'नाम' की दीक्षा जब वो किसी शिष्य को देते हैं तो इसी कामना से कि ईश्वर कृपा से इसी 'नाम' के तप से इन्हें भी ईश्वर की प्राप्ति हो। यह विद्वान् जन दीक्षा के साथ वेदों से नियम, योगाभ्यास, यज्ञ और अग्निहोत्र की शिक्षा भी देते हैं और 'नाम–सिमरन' के साथ नित्य इन्हें भी आचरण में लाने की प्रेरणा देते हैं।

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

निस्सन्देह आज यह बहुत ही दुःख की बात है कि जो यह तथाकथित कई सन्त हैं उन्होंने जनता को बहुत ही गुमराह किया है यह कह कर कि हमसे 'नाम' लो तो तर जाओगे, श्री राम और श्री कृष्ण भी 'गुरुनाम' लेकर ही तरे थे और अधिकतर लोग इसे ही सच मानकर उनके चंगुल में आ भी जाते हैं।

यथार्थ में नाम की महिमा क्या है, क्यों हम 'नाम का जाप करें, यह गुण तो कोई वेदों का ज्ञाता विद्वान् गुरु ही बता सकता है। हमनें भी अपने आचार्य से ही जाना कि मनुष्य का जन्म ईश्वर प्राप्ति के लिए ही हुआ है और नाम–सिमरन से ही उस ईश्वर को हम जान सकते हैं। उन्होंने बताया कि ईश्वर के नाम में भी वही शक्ति है जो स्वयं ईश्वर में है। जैसे किसी भी देश का प्रधानमंत्री किसी दूसरे देश में कोई भी प्रस्ताव भेजता है तो दूसरे देश में उस प्रस्ताव को सम्बंधित प्रधानमंत्री द्वारा ही कह कर पढ़ा जाएगा जबकि प्रधानमंत्री वहाँ गए नहीं है, उनके नाम ने ही काम किया। उसी प्रकार जो भी एकाग्र चित्त वृत्ति से ईश्वर के 'नाम का स्मरण' करता है यह विद्वान्जन कहते हैं कि वह निश्चय ही धीरे–धीरे गुरु कृपा से ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव को जानने लगता है, यह वेदवाणी उसकी बुद्धि में प्रवेश करने लगती है, और वह पापकर्म से मुक्त होने लगता है और देव बनने लगता है।

आचार्य से ही हमने जाना कि 'नाम सिमरन' के लिए सदैव आप का अपना आसन होना चाहिए, जिसके ऊपर बैठ कर 'नाम' सिमरन किया जाए। किसी भी एक

यश का मुख्य स्थान दान तथा स्वर्ग का सत्य है। (महाभारत-वनपर्व)

आसन—सिद्ध/सुख/पदम् आसन पर बैठ कर 'नाम' सिमरन का अभ्यास करना चाहिए। आसन से आचार्य ने समझाया कि ***"स्थिरम् सुखम् आसनम्"*** जिस पर बैठ कर आप का शरीर स्थिर हो जाए, हिले—डुले नहीं और आप को सुख देने लगे। यह निरन्तर अभ्यास करने से ही सम्भव है। आचार्य से यह भी जाना कि 'नाम' सिमरन करते समय ध्यान दो भवों के बीच जो स्थान है (वेदों में इसे मूर्धा कहा है) वहाँ लगाना चाहिए, परन्तु शुरु—शुरु में आम आदमी के लिए यह बिल्कुल भी सम्भव नहीं है। ध्यान वहाँ लगेगा ही नहीं, हर थोड़े क्षणों में ही ध्यान इधर—उधर चला जाएगा, आचार्य ने यह भी बताया कि फिर उसे वहाँ से हटाकर वापिस लाओ, ऐसा निरन्तर अभ्यास करने से एक दिन आएगा कि ध्यान लगने लगेगा और आनन्द आने लगेगा। गायत्री मन्त्र के जाप की भी आचार्य नें बहुत ही अहमियत बताई है, अर्थ सहित जो भी इस का जाप करता है, 'नाम—सिमरन' उसका परिपक्व होने लगता है।

आचार्य ने यह भी समझाया कि 'ईश्वर के नाम' का सिमरन अर्थ और भावना सहित करना चाहिए तभी यह हमें सुख देगा। 'नाम' का सिमरन किस मुद्रा में और कैसे करना चाहिए यह सब रहस्य भी हमने अपने आचार्य से जाने और मेरे को यह महसूस होता है कि यह सब विद्वानों के आश्रय में रह कर ही सीखना चाहिए। आचार्य के साथ जब भी हम यज्ञ में बैठते हैं, ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि हम ओजस्वी, तेजस्वी और पुरुषार्थी बनें। ***'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'*** हे ईश्वर! हमारा मन शुभ विचारों वाला हो। नित्य हम सुबह—शाम अग्निहोत्र और 'नाम—सिमरन' का जाप करें, ताकि विद्वानों के संग से, हे ईश्वर! तेरी यह वेद—वाणी हमें समझ में आने लगे और हमारा मन सदा शुभ कर्म करने में लगे।

संपादक के विचार

अंजना बेटी ने ईश्वर के नाम जपने पर अच्छा प्रकाश डाला है। वस्तुतः वर्तमान काल में वेद विद्या के अध्ययन में आई अत्याधिक कमी के कारण भारतवर्ष ही नहीं, विश्व की सम्पूर्ण जनता ईश्वर, उसके कर्म, स्वभाव, ज्ञान आदि से अनभिज्ञ होने के कारण अधिकतर अन्धविश्वास रूप परंपरा में प्रवेश करती दृष्टिगोचर हो रही है। नाम के विषय में भी वैदिक ज्ञान की आवश्यकता है। ***ऋग्वेद मन्त्र 1/164/46*** का भाव है कि जैसे वेदों में अग्नि आदि पदार्थों के इन्द्र आदि अनेक नाम हैं, उसी प्रकार परमात्मा तो एक है परन्तु उसके अग्नि, वायु आदि अनन्त नाम हैं।

यजुर्वेद मन्त्र 32/1 का भाव है कि ईश्वर के अग्नि, आदित्य, वायु, चन्द्रमा, शुक्रम् एवं ब्रह्म आदि ऐसे अनन्त गौणिक नाम हैं परन्तु ***अथर्ववेद मन्त्र 9/10/28*** में स्पष्ट किया कि इन वेदों में वर्णित नामों को ***"विप्राः एकं सत् बहुधा वदन्ति"*** अर्थात्

(विप्रा) वेद ज्ञान से परिपूर्ण ऋषि–मुनि, योगीजन ही (सत्) अर्थात् जिसके समान दूसरा और कोई ईश्वर नहीं है, उस ईश्वर को भिन्न–भिन्न नामों से कहते हैं। यहाँ विचार यह करना है कि वेद के ज्ञाता ही ईश्वर के उन वेदों में वर्णित अनेक नामों को कहते हैं, अन्य नहीं। अर्थात् जो वेद नहीं जानते, वे इन नामों को भी नहीं जानते। अतः वेद के विद्वानों से ही ईश्वर के नामों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

कोई भी नर–नारी वेद विद्या, उसमें कही सुशिक्षा और श्रद्धा को जाने बिना ना तो सत्य व्यवहारों को प्राप्त कर सकते हैं और ना ही असत्य व्यवहारों का त्याग कर सकते हैं। देखने में भी आता है कि इस वैदिक ज्ञान को जाने बिना तथा–कथित सन्त और मनुष्य आदि भिन्न–भिन्न प्रकार की पूजा–पाठ में लगे रहते हैं, ऊँचे–ऊँचे पदों पर भी पढ़–लिखकर कई बैठे होते हैं परन्तु प्रायः संयम–नियम की कमी के कारण उनके अन्दर दोष–वृत्ति देखी जाती है और वे समाज में गन्दगी फैलाते हैं। दीक्षा का अर्थ तो ब्रह्मचर्य आदि गुणों को धारण करना है। वेद के ज्ञाता, विद्वान् से वैदिक ज्ञान सुनना, समझना और वैदिक शिक्षाओं को आचरण में लाना है। फलस्वरूप ही नाम जाप आदि की सिद्धि प्राप्त होती है। इस विषय में ***यजुर्वेद मन्त्र 19/30*** का अवलोकन करें, जिसमें कहा– ***''व्रतेन''*** व्रत अर्थात् ब्रह्मचर्य व्रत, सत्य भाषण आदि के नियम धारण करने से जिज्ञासु ***''दीक्षाम्''*** अर्थात् ब्रह्मचर्य, विद्यादि सुशिक्षा और शुद्ध बुद्धि को ***''आप्नोति''*** प्राप्त करता है। आगे कहा कि दीक्षा प्राप्त करने और उक्त गुणों को धारण करने से धन आदि को प्राप्त होता है। फिर अनादि सत्य को विद्वानों से जानकर सत्य को प्राप्त होता है। दीक्षा में ही ईश्वर के नाम का ज्ञान, उसके जाप की विधि, योगाभ्यास, अग्निहोत्र आदि अनेक वैदिक विषयों का ज्ञान दिया जाता है और उन्हें जीवन में धारण कराया जाता है, जिसमें प्रथम ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना परमावश्यक होता है। ईश्वर के नाम जाप से पहले यहाँ तनिक सा ईश्वर के बारे में समझें। ***योगशास्त्र प्रथम भाग में इसका वर्णन संक्षेप में इस प्रकार हैः–***

1. जिसके ऐश्वर्य की कोई सीमा नहीं है, वही ईश्वर है। ***(स च पुरुषविशेष इति)*** अर्थात् वह परमेश्वर पुरुषविशेष है अर्थात् जीवों से भिन्न है ईश्वर।
2. ***(निरतिशय)*** अर्थात् जिसके समान कोई दूसरा और ना हो, वही ईश्वर है। ***(सर्वज्ञबीजम्)*** अर्थात् जिसमें नित्य सर्वज्ञता का बीज है। अर्थात् ईश्वर सबकुछ जानने वाला है। जिसमें सर्वज्ञता का बीज है, जो नित्य सर्वज्ञान का मूल है। अर्थात् उसी से विश्व में सब ज्ञान निकला है, ईश्वर से अधिक बढ़कर किसी दूसरे का ज्ञान नहीं है।
3. व्यासमुनि जी कहते हैं सामान्य ज्ञान विशेष

मनुष्य का परम आश्रय दान है। (महाभारत-वनपर्व)

ज्ञान प्राप्ति में समर्थ नहीं है। अत: ऋषि कहते हैं कि ईश्वर नाम, महिमा एवं उसके प्रभाव आदि की विशेष प्राप्ति केवल वेदों द्वारा खोजनी चाहिए।

4. वह ईश्वर हमारे पूर्व के चार गुरुओं का भी गुरु है। उसका नाम प्रणव अर्थात् ओ३म् है।
5. ईश्वर के नाम का जप, अर्थ एवं भावना सहित करना चाहिए।
6. स्वाध्याय से योग में स्थिर होवें तथा योग से स्वाध्याय में स्थिर होवें। वेदों का स्वाध्याय और वेदों में वर्णित अष्टाँग योग, इन दोनों सम्पत्तियों से परमात्मा प्रकाशित होता है। यह योग की रीति है। यह सबकुछ वेद के ज्ञाता, गुरु से समझना होता है।
7. ईश्वर के अर्थ सहित नाम जाप से (ओ३म् जाप अथवा गुरु के द्वारा दिया हुआ नाम जाप) अन्तरात्मा के स्वरूप का पूर्ण ज्ञान हो जाता है और जप द्वारा साधना में आए विघ्नों का भी नाश हो जाता है।

वर्तमान में कई सन्तों द्वारा प्राय: यह उदाहरण दिया जाता है कि श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि महापुरुषों ने भी गुरु से ही नाम लिया था। परन्तु सत्य का, वेदविद्या का, श्रद्धा, सुशिक्षा आदि का ज्ञान ना होने के कारण और मुख्यत: वाल्मीकि रामायण का अध्ययन ना होने के कारण भी ऐसे तथाकथित सन्त, यह नहीं जानते कि श्रीराम आदि विभूतियों ने वेद एवं अष्टाँग योग विद्या आदि को जानने वाले ऋषि वसिष्ठ एवं ऋषि संदीपन से वैदिक दीक्षा प्राप्त की थी और श्रीराम एवं श्रीकृष्ण महाराज यज्ञ एवं योगाभ्यास आदि अनेक वैदिक शिक्षाओं का नित्य अभ्यास करते थे (देखें वाल्मीकि रामायण एवं महाभारत ग्रन्थ)।

ऊपरलिखित वैदिक विचारों से हम प्रेरणा लें एवं शीघ्र अतिशीघ्र किसी वेद के ज्ञाता, विद्वान् की शरण में जाकर वेद सुनें, वैदिक शिक्षाओं पर आचरण करें और इस प्रकार अपना जीवन धर्म मार्ग पर लगाकर सुखी रहें। VTV

वेदोक्त धर्म नित्य फल देने वाला है। (महाभारत-वनपर्व)

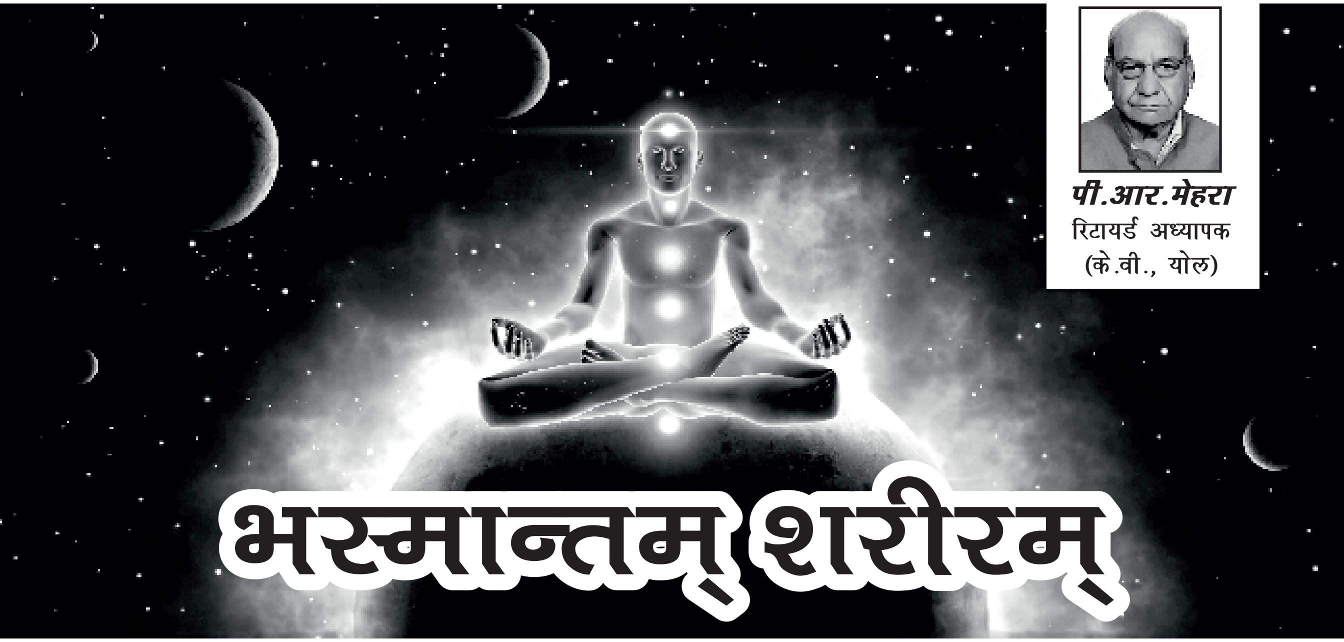

पी.आर.मेहरा
रिटायर्ड अध्यापक
(के.वी., योल)

भस्मान्तम् शरीरम्

गतांक से आगे– हर नर—नारी को यह चिन्तन करना अति आवश्यक हो गया है कि जिस मृत देह को स्वयं अपने हाथों से चिता में जलाया है, उसका मुख, हाथ, पैर इत्यादि सभी तो अग्नि में भस्म हो गए फिर उसके सम्बन्धी जो मरणोपरान्त दान—पुण्य तथा अन्य कोई भी कर्म कर रहे हैं, उन किए हुए कर्मों का फल, उस मृत प्राणी को कैसे प्राप्त होगा?

आजकल सदियों से चली आ रही कुरीतियों में दो शब्दों का प्रचलन चला आ रहा है— ***श्राद्ध*** वा ***तर्पण।*** आजकल के पण्डित हर वर्ष पितरों यानि मरे हुए प्राणियों (सगे—सम्बंधियों) का श्राद्ध करवाते हैं अर्थात् दान—पुण्य करते हैं, कहीं—कहीं पण्डितों की 16 दिन तक भोजन की व्यवस्था भी करते हैं।

यहाँ यह एक चिन्तन का विषय है, बुद्धिजीवी वर्ग को इस पर ध्यान देना होगा कि जिस मृत प्राणी का हम श्राद्ध कर रहे हैं, तर्पण यानि पिण्ड दान कर रहे हैं, उसे तो सभी कुटुम्ब के लोग एवं अन्य समाज के प्राणी, अग्नि में स्वयं ही भस्म कर आए हैं। उसके (मृतक प्राणी) हाथ—मुँह आदि, सभी तो अग्नि में भस्म किए जा चुके हैं फिर यह किया गया

❖ ***श्राद्ध और तर्पण कौन खा रहा है?***

❖ ***पिण्ड दान को कौन से हाथ ग्रहण कर रहे हैं?***

❖ ***ज़रा सोचें तो?***

अपात्र को दान देना और सत्पात्र को ना देना, ये धन का दुरुपयोग है। (महाभारत-उद्योगपर्व)

❖ ***श्राद्ध का वैदिक अर्थ तो श्रद्धा से किया गया कार्य है।***

श्राद्ध तो जीवित माता–पिता, बड़े वृद्धों का, आचार्य–गुरुजनों का होता है अर्थात् श्राद्ध केवल जीवित प्राणी का होता है, मृत शरीर का नहीं। उनका आदर–मान, सत्कार, प्रेम से भोजन करवाना, पूर्ण आतिथ्य करना ही श्राद्ध कहलाता है। श्राद्ध तो वह है– जिसके प्रति श्रद्धा हो, उसका आदर–मान, सत्कार करें, उसकी सेवा तन, मन, धन से करें, उसकी आज्ञा में रहें। हमारी सेवा से वह तृप्त हो जाएँ।

शरीर से निकला अजर, अमर जीवात्मा जब दूसरे शरीर में चला जाता है तो भला हमारी सेवा आदि से वह जीवात्मा कैसे तृप्त होगा? उसे भोजन किस विधि से करवाएँगे?

पितर एक वैदिक शब्द होने के नाते, इसका अर्थ यह भी है– सनातन पद्धति से चली आ रही वैदिक विद्या को जानने वाला आचार्य। इसी पितरः शब्द का दूसरा अर्थ है कि जो हमारे पूर्वज हुए हैं। अतः एक परिस्थिति में पितर शब्द का अर्थ जीवित माता–पिता, आचार्य आदि से सम्बंधित है तथा पूर्व के पितर शब्द का सम्बंधित वेद मन्त्रों में अर्थ हमारे स्वर्गवासी पूर्वजों से है।

वेदों में पितरों अर्थात् जीवित माता–पिता और वैदिक आचार्य का तर्पण अर्थात् उनका आदर–मान, सत्कार और सेवा करके उन्हें तृप्त कर देने की आज्ञा है। वर्तमान युग में जो पितरों अथवा मृत प्राणियों–सगे–सम्बंधियों के लिए तर्पण करते हैं, पिण्ड दान करते हैं, पण्डितों को दान और भोजन इत्यादि करवाते हैं, वे स्वयं करवाने वाले, और करने वाले पण्डित आदि वेद–विरुद्ध कर्म करने के कारण सुख को प्राप्त नहीं होते। यथार्थ में ''भस्मान्तम् शरीरम्'' यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का पन्द्रहवाँ मन्त्र है। पूर्ण मन्त्र है–

''वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तम् शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतम् स्मर।।''

(यजुर्वेद मन्त्र 40/15)

भाव इस प्रकार है कि ईश्वर के विधान के अन्तर्गत जब जीवात्मा शरीर त्यागने ही वाला होता है, ईश्वर ज्ञान दे रहा है कि क्षण में ही तू (जीवात्मा) इस देह को त्यागने ही वाला है; इसलिए ***हे प्राणी! तू ओ३म् का स्मरण कर। उस आदित्य, अविनाशी, सर्वशक्तिमान्, शुद्ध, चेतन, सर्वज्ञ, ज्योतिर्मय, अशरीरी ईश्वर का स्मरण कर। ''क्लिबे स्मर'' अर्थात् अपने स्वरूप का स्मरण कर।***

''कृतम् स्मर'' इस आयु में किए हुए शुभ–अशुभ कर्मों का स्मरण, चिन्तन– मनन कर। तत्पश्चात् पंचभौतिक जड़ शरीर अपने कारण शरीर (प्रकृति) के आश्रित हो जाता है। अतः यह जड़ शरीर अग्नि में भस्म करने योग्य है अर्थात् इस शरीर का दाह कर्म (अन्त्येष्टि कर्म) करना चाहिए, बिना किसी

केवल धर्म ही परम कल्याणकारक है। (महाभारत–उद्योगपर्व)

देरी के। यही उपदेश इस मन्त्र का है कि मृत्यु प्राप्त इस शरीर का समाज के जीवित प्राणी, सगे—सम्बन्धी तुरन्त दाह कर्म करें, ऐसी वेद आज्ञा देते हैं।

संपादक के विचार

जब तक शरीर में जीवात्मा निवास करती है तब तक ही शरीर द्वारा जीवात्मा की प्रेरणा से जो शुभ या अशुभ कर्म, दान—पुण्य आदि किए जाते हैं, उन्हीं कर्मों का संस्कार जीवात्मा पर पड़ता है। जीवात्मा इन कर्मों का फल भविष्य के आने वाले जन्मों में भोगती है। जब जीवात्मा शरीर से निकल जाती है तब उस जीवात्मा के लिए कोई भी सगा—सम्बन्धी दान—पुण्य, श्राद्ध इत्यादि कोई भी कर्म करता है तो वह जीवात्मा के शरीर के द्वारा ना होने के कारण जीवात्मा के लिए फलदायक नहीं हैं अपितु व्यर्थ है।

ऋग्वेद मन्त्र 10/135/1,2 के अनुसार जीवात्मा को परमेश्वर मनुष्य का शरीर देता है और जीवात्मा शरीर की इन्द्रियों से संयुक्त होकर शुभ—अशुभ कर्म करता है। जब जीवात्मा का शरीर ही भस्म हो जाता है तब जीवात्मा के लिए कोई अन्य श्राद्ध, तर्पण आदि करे तो वह वेदों द्वारा प्रमाणित कर्म ना होने के कारण मनुष्यकृत मिथ्या कर्म है। वैसे भी ***यजुर्वेद अध्याय 39*** के अनुसार जीवात्मा शरीर से निकलकर तेरह दिन तक सुषुप्तावस्था में रहती है। उसके आँख—नाक, कान, हाथ—पैर आदि अंग शरीर सहित चिता पर जला दिया जाता है। अतः वह देख नहीं सकती, सुन नहीं सकती, चल नहीं सकती, इत्यादि। तेरह दिन के पश्चात् वह कर्मानुसार पशु—पक्षी अथवा मनुष्यादि का दूसरा शरीर धारण कर लेता है। अतः ना तो वह भूत—प्रेत, चुड़ैल आदि बन सकता है और ना ही उसके लिए श्राद्ध, तर्पण आदि किया जा सकता है।

यजुर्वेद अध्याय दो के अन्तिम मन्त्रों में पितर शब्द जीवित आचार्य के लिए प्रयोग किया गया है और उसमें उपदेश है कि मनुष्य गृहस्थ सुख एवं आत्मिक सुख के लिए आचार्य (पितर) की शरण में जाएँ। सामवेद मन्त्र ७४४ में पितर शब्द स्वर्गवासी पूर्वजों के लिए इस प्रकार प्रयोग किया गया है— ''यं ते पूर्वम् पिता हुवे'' अर्थात् हम वेदानुसार वही ईश्वर भक्ति आज भी करें जो हमारे पूर्वज पिछले युगों से करते थे।

यजुर्वेद मन्त्र 32/14 में भी कहा—

''ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते''

अर्थात् हे परमेश्वर! आज भी मैं वही पूजा एवं वेदज्ञ विद्वानों की सेवा करूँ जो हमारे पिछले युगों के पितर (पूर्वज) करते आए हैं। अतः आज पितर शब्द के वैदिक अर्थ समझने की आवश्यकता है, जो विद्वान् से वेदविद्या सुने बिना सम्भव नहीं। सभी मनुष्यों द्वारा वेदाध्ययन की आज्ञा स्वयं ईश्वर ने वेदों में दी है, ईश्वर की आज्ञा पालन करना हमारा कर्तव्य है। VTV

कामी तथा चोर को रात्रि में निद्रा नहीं आती। (महाभारत-उद्योगपर्व)

Correspondence between Swami Ram Swarup 'Yogacharya' & Late S. Khushwant Singh Ji

(Continued)

(on the subject of Atheism & Casteism etc.)

Original Letter

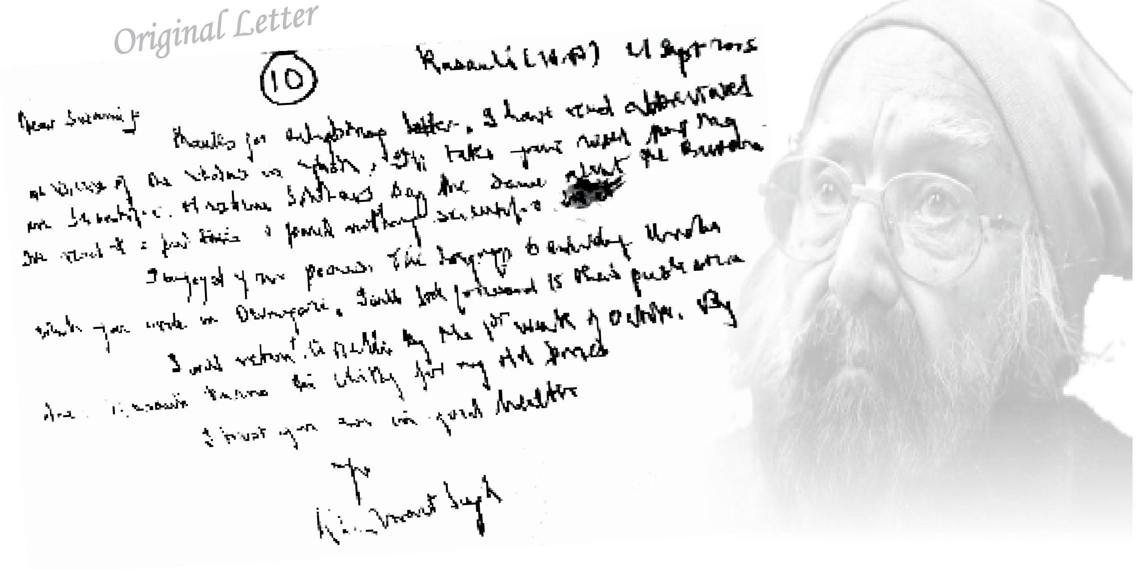

10

Kasauli (H.P.) 21 Sept 2005

Dear Swamiji

Kasauli (H.P.) 21st Sep 2005

Dear Swamiji,

Thanks for enlightening letter. I have read abbreviated views of the Vedas in English. I take your views – prove they are scientific.

Muslim scholars say the same about the Quran. I have read a few shias and found nothing scientific.

I enjoyed your poems. The language ………… which you work in Devnagri. I will look forward to their publication.

I will return to Delhi by first week of October. By then Kasauli…. for my old bones.

I trust you are in good health.

Shri Khushwant Singhji
17th October 2010
49-E SUJAN SINGH PARK
NEW DELHI-110003

Swami Ram Swarup Ji, Yogacharya
Ved Mandir,Tikka Lehsar
Yol Bazar, Yol Camp,
Distt. Kangra (H.P.)
Pin 176052 (INDIA)

Most Respected Shri Khushwant Singh Ji,

Namaste,

Received your loving letter dated 21st Sep, 2005 and I thank you for the same. I hope this letter finds you in the best of your health. To make you able to shower your golden teachings to the public, I four-five days back read your valuable article on saints, in which you have mentioned about both Babus and others; I read out the entire article before all the aspirants, during the performance of holly Yajyen. Everyone appreciated the valuable views which are directly giving education to alert the people from false prophets.

I have also read Quran-Sharief and have been giving answers to muslim gentleman on vedmandir.com website, about the Vedas which they hundred percent accept. About two-three months back, a muslim gentleman stated that the avtar of kalki will be in the shape of Hazrat Mohammad in future. He quoted Atharvaved Kand 20 sukta 127 which I described in detail that the mantra does not have the name of Hazrat Mohammad Sahib because in Vedas there is not a single history or story. Thus the mantra praises the king who looks after his public well and the God who looks after the universe.

Some present so-called saints state that they (the said saints) are the managers of God and God has sent them to give the preach to public. I deny to such questions and give answer that when all such saints tell the quality of God as "Almighty" (Sarvashaktimaan) then why God needs help through his messengers? Is God dependent on the messenger like a P.M on defence, finance and Home minister etc. so such false worship is being going on not only in our country but throughout the world.

I am extremely busy in completing my second part of Yog Shastra since last more than three months, which is now about to finish, so I am sorry for the delay in reply.

Present so-called Yogis are teaching Aasan, Pranayaam etc. which are totally against the Vedas. They have made it a profession which is again a blunderous sin.

Moreover sir, Sects have never spread International brotherhood. After passing away, all the dignitaries even Mahatma Gandhi, mostly people start praising them either to make profession in spiritualism and gathering of votes in politics. I sometimes think that if a single dignitary like Sri Krishna in his original shape manifests in India then the priest will sure pray him to go back with the fear to close their temple, which is the source of income to live upon.

Mirza Ghalib is a drastic example that he is being remembered with honour but when he was alive, he passed his life with hands to mouth. On this I have vent out my feelings in this sher-

Sone do ab Sarupko, kiwoh mar Gaya,
ShikweShikayatSabke, dafankar Gaya,
MayyiyatPeaakarSarupki Rona-ye-ZaarZaar,
Yun Samjhunmarne Par, ZamanaBadalgaya.
BhootKoDekhkar Dar Jana KitnaAjeebhai
Marne kebaadRooh-Ki Shakalhainajeebhai
PoojtehainPatharDewaronmeinwah-re-wah

वेद ईश्वरीय वाणी

InsaniyatPuje Jahan, WohDuniyanKahaanKareeb Hai,
Mudda-e-Emaan Par ButParastiBemisaal
ZindainsaniyatYahaanBilakhti-Sisakti Si Gareebhai,
But Parastimein But Gar JeeUtheKabhiSwarup
DandhaChaupatPaseene se Tar-batarMautKareeb Hai.

My book ***"Dil Se Dil Kee Baat"*** has been printed today in which my own experiences in the shape of shayari are mentioned. My education was completed in Meerut and I used to attend mushayare and Nath there. So in the Shayari words are from Urdu language but really I don't know Urdu script, please. The book is in Hindi, please and is being sent to your excellency for perusal and direct comments as usual by you. Because I love you due to your so many good qualities including this that you never hesitate to give straight forward comments. We always remember you here and I wish you a long, happy life to shower your golden wisdom on public by writing articles, stories etc. Awaiting your excellency valuable reply.

Thanks a lot.

Your's sincerely,

Science In Vedas

- Atharvaved mantra 11/6/22 says about five directions (Dishanyen) and six seasons.
- Rigved mantra 1/105/1 says about moon that it revolves in space along with air in space and depends upon the light of sun. O King! Learn the lightening of the bright, golden rays which donot give the benefit of yourthoughtful technical dealing and you are unable to use it properly. So, this is the significance to invent electricity.
- Yajurved mantra 18/24 teaches right from number 1,2,3,4 to counting upto infinite. This mantra also teaches addition telling 1+2=3; 3+2= 5 etc.
  Similarly, it teaches substraction.
- Yajurved mantra 18/25 teaches the table of four saying 4x 4= 16 etc.
- Samved mantra 65 teaches about three types of fires in universe i.e. electric, sun and general fire on earth produced from wood, coal etc.
- Yajurved mantra 31/1 says about 10 fingers including thumb, i.e. four fingers and one thumb. Thus it teaches to count on fingers which has been a tradition.
- Yajurved mantra 17/2 says 1 and 10 and 10x 10= 100. It further says 10 times 100=1000; 10 times 1000= 10,000; 10 times 10,000= 1 lakh etc. But in Vedas English words are not there. For example, One is mentioned as "Eka", 10 called "Dasha"; 100 called "Shatam", 1000 called "Sahastram" then other figures are Ayutum, Niyutum, Kharab, Nikharab, Mahapadam, Shanku, Samudra, Madhya, Ant, Prardh etc. In school and college, students and teachers generally go upto Arab and Kharab but seldom go uptoPrardh.
- Yajurved mantra 23/62 explains how to make triangular vedi, rectangular vedi circular vedi etc. which shows the knowledge of trigonometry.
- Rigved mantra 10/130/3 teaches about geometry.Samved mantra 222 clearly describes about three lokas-

1.) Heavenly bodies comprising light emitting planets etc.
2.) Space

3.) Earth.

The space beholds heavenly bodies and earth.

- Yajurved mantra 3/6 mentions about earth that is oblate spherical i.e., flattened at poles and that it rotates in space.
- Vedas mention about astronomy wherein study of space is based on Shunya (zero) and from the structure of earth mentioned.
- Rigved mantra 1/34/11 states to the technicians/engineers to make aeroplanes which are capable to remain in the sky for a journey continuously for three days, three nights and further eleven days and eleven nights.

  In the said mantra, the ancient Rishis invented the figure zero which has been now useful for the whole the whole of the world.
- European scientist Professor J.P.Halstead has written a book named "Ganit Ki Neev Aur Prakriyayen". On the 20th page of his book he has written that the importance of zero is beyond description. Zero i.e. nothing, has not only been named but to give it in a form and force has been a wonderful task of only Hindu race. This is like a strength which gives dynamic power to a construction.
- Samved mantra 630 says that in universe there are so many small and big planets which rotate on their own axis and in a fixed orbit but never break their course/direction.
- Vedas say that energy of sun is deteriorating and one day the universe will be destroyed. Science says similar rule and introduces it as "Entropy law".
- Atharvaved mantra 9/9/11 says that this earth is rotating continuously in the space on which the human-beings, animals, plants etc. thrive. The earth has so much load but its axle never becomes hot. This is astonishment.

Sir, these examples of science mentioned in Vedas is like a cumin in camel's mouth and remaining is unlimited.

History

Vedas donot contain history of any person yet hints to know the history is in Vedas.

For example- Vedas tell vide Rigved mantra 10/190/1 that before the creation, the Vedas and Prakriti came before the Almighty God i.e. the same become the subject of creation before the God. Mantra 10/190/3 states that the Almighty God creates sun, moon and heavenly bodies emitting light and space etc. Similar to the sun, moon etc. made in the previous universe. So, these mantras state about the past history of the creation.

Sukta 189 of Rigved mandal 10 states that the earth revolves around the sun in the space and rotates from east to west direction. The sun rays spread between earth and heavenly bodies emitting light right from sunrise to sunset whereas the sun is only at one place in space. Next mantra states 30 mahurts comprise one day and night depending on sun.

Rigved mantra 10/183/1,2 state about marriage. Mantra states that in this matter consent of the bride must be obtained. Then the bridegroom may accept the proposal of the marriage etc.

Atharvaved mantra 9/10/14 asks the question that where is the other extremity of the earth? The mantra itself gives answer that other extremity of the earth is the place where that havankund is situated. Mantra in this way teaches that earth is oblate spherical so every point of the earth where a person is standing or sitting is the last ending point.

Atharvaved mantra 90/9/13 states that there is a cycle of time containing 12 spokes. It indicates 12 months of a year which never become mortal.

वेद मार्ग
पर चलकर चित्त के कुसंस्कारों को धोएँ

डॉ. वीना राज
जम्मू

(गतांक से आगे).......

परन्तु आज जो पार्कों में, सड़कों के किनारे जगह–जगह ध्यान लगाकर बैठे लोग नज़र आते हैं तो यह बड़े हैरत की बात लगती है। स्वामी जी के अटूट ध्यान के विषय में उनका हर शिष्य जानता है। यहाँ मुझे अभी हाल ही में उनके साथ ध्यानावस्था का बीता अनुभव याद आ रहा है जिसका अनुभव अन्य शिष्यगणों ने भी किया। एकाग्रचित्त ध्यानावस्था में उनके मुख से निकलते वैदिक वचन का दृश्य ऐसा आश्चर्य चकित करने वाला था कि एक बार कहीं यज्ञ के दौरान प्रवचन प्रारम्भ होने के कुछ क्षण पश्चात् बारिश होने लगी। जिस टैंट में प्रवचन चल रहा था, उस टैंट से भी रिस–रिस कर बारिश का पानी महाराज जी के ऊपर गिरता रहा परन्तु वह इस परिस्थिति से बेखबर, तल्लीन हुए प्रवचन करते रहे। यहाँ यह लिखना ना भूलूँगी कि किसी बेहोश के ऊपर पानी की बूँदें डाल दो, तो वह भी उठ खड़ा होता है परन्तु महाराज जी पानी में भीगते रहे और प्रवचन चलता रहा। यह कैसे ब्रह्म में तार जुड़ने का मद है। कुछ देर तो शिष्य चुपचाप बैठे रहे क्योंकि जो बचपन से उनसे जुड़े हैं वह तो उनके ध्यान में चलते प्रवचन के बीच बोलने का साहस भी नहीं कर सकते, चुपचाप बैठे रहे। पर स्वामी जी के स्वास्थ्य को देखते हुए एक शिष्य ने बड़ा साहस जुटा कर कहा गुरुदेव बारिश हो रही है, पानी टैंट में टपकना शुरु हो गया है तो उन्होंने आँखें खोली और विस्मय से बोले अच्छा बारिश हो रही है, और बोले चलो नीचे चलते हैं और वह नीचे आ गए। मेरे विस्मय का तो तब ठिकाना ना रहा जब नीचे आकर उन्हें यह भी मालूम न था कि उनकी टोपी और फिरन एकदम गीले हैं, फिर हमने कहकर कि आप अपना फिरन और टोपी बदल लेवें तब कहीं उन्होंने वो अपने कपड़े बदले, ऐसा है स्वामी जी का अटूट ध्यान, जो ऋषियों–मुनियों की याद दिलाता है। अन्यथा आज के युग में ऐसी ध्यानावस्था के योगी तो दुर्लभ ही प्रतीत होते हैं। ***स्वामी जी ने अपने जीवन के विस्मयजनक अनुभव गुलिस्तान न्यूज में खास बात में यू–टयूब पर शेयर किए हैं, यही नहीं उस वार्तालाप में स्वामी जी ने आज के युग में जनता के मन में***

काम-क्रोध और लोभ, ये आत्मा का नाश करने वाले नरक के तीन दरवाज़े हैं। (महाभारत-उद्योगपर्व)

उठते बहुत से प्रश्नों के उत्तर दिए हैं। उदाहरणार्थ कि क्या मरने के पश्चात् दसवीं, तेरहवीं, बरसी, चौबरसी करनी चाहिए?इसका उल्लेख गुरुजी ने वैदिक ज्ञान से किया है। लुप्त होती संस्कृत भाषा को क्या बचाना ज़रूरी है?देश की समस्याओं को वैदिक आधार पर सुलझाने की प्रेरणा दी गई है। इस 'खास बात' की वार्तालाप में पाठक चाहें तो ऊपरलिखित लिंक पर स्वयं देखकर इन संशयों का निवारण कर सकते हैं एवं ऐसे महान् प्रतिभाशाली व्यक्तित्व से स्वयं परिचित हो सकते हैं। मैं जानती हूँ कि महाराज जी का टी.वी. पर साक्षात्कार देखकर मुझे कोई अच्छी लेखिका नहीं मानेंगे क्योंकि मैं स्वामी जी के व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से शब्दों द्वारा व्यक्त करने में असमर्थ रही हूँ। स्वामी जी से वर्षों से मेरा परिवार जुड़ा हुआ है और अनेकों यज्ञों में हमने भाग लिया है और अब भी ले रहे हैं। इसी आधार पर मेरा अपना अनुभव है कि स्वामी रामस्वरूप जी दुनिया में सबसे अनोखे और अलग से दिखाई पड़ते हैं। ना कोई लोभ ना कोई लालच। अभी हाल ही में तीन दिन का यज्ञ समारोह हुआ। अन्तिम दिन पूर्णाहुति में बहुत से जिज्ञासुओं ने भाग लिया और यज्ञ समाप्त होते ही तुरन्त गुरु जी उठकर चले गए। उनकी यह कोई इच्छा दिखाई नहीं दी कि संगत उन्हें धन आदि की दक्षिणा दे। जबकि वेदानुसार दक्षिणा अवश्य दी जाती है, अन्यथा यज्ञ का पुण्य समाप्त हो जाता है। संगत ने ही दक्षिणा एकत्र की। गुरु जी वहाँ उपस्थित नहीं रहे। वह समय उन्होंने कुछ संगत के साथ बैठकर उन्हें ब्रह्मज्ञान देकर गुज़ारा। उन्होंने उस समय यह भी कहा कि जिज्ञासु प्राय: यह कहते हैं कि अमुक मेरी मामी है, मासी है, बुआ है इत्यादि अन्य संबंधी हैं, मैं सोच में हूँ तीन दिन से मैंने यज्ञ में इतना ज्ञान बरसाया, क्या कोई ज्ञान लेने की चाह से भी यहाँ आया था। ऐसे शब्द सुनकर मेरा मन द्रवित सा हो गया। अन्यथा प्रायः गुरुजनों के स्थान पर अधिकतर चढ़ावे को ही ज़्यादा अहमियत दी जाती है। आमतौर पर आजकल जहाँ भी यज्ञ के आयोजन करवाए जाते हैं तो पहले पैसे की डिमांड रखी जाती है। योग शिविर लगाए जाते हैं तो फीस रखी जाती है। परन्तु स्वामी जी के स्थान पर ऐसी कोई बात नहीं देखी।

स्वामी जी एक बार अमेरिका गए। वहाँ उन्हें हिन्दू यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका में योग विद्या का आचार्य बनने का प्रस्ताव दिया गया और कहा कि हम आपको डालर में तोल देंगे। उन्होंने कहा क्या योग विद्या बेचने की चीज़ है? और वहाँ रुके नहीं अपितु भारतवर्ष वापिस आ गए।

(क्रमशः) VIV

जो धनवान् होकर भी दान ना दे, वह पानी में डुबो देने योग्य है। (महाभारत-उद्योगपर्व)

VALUE OF Truth

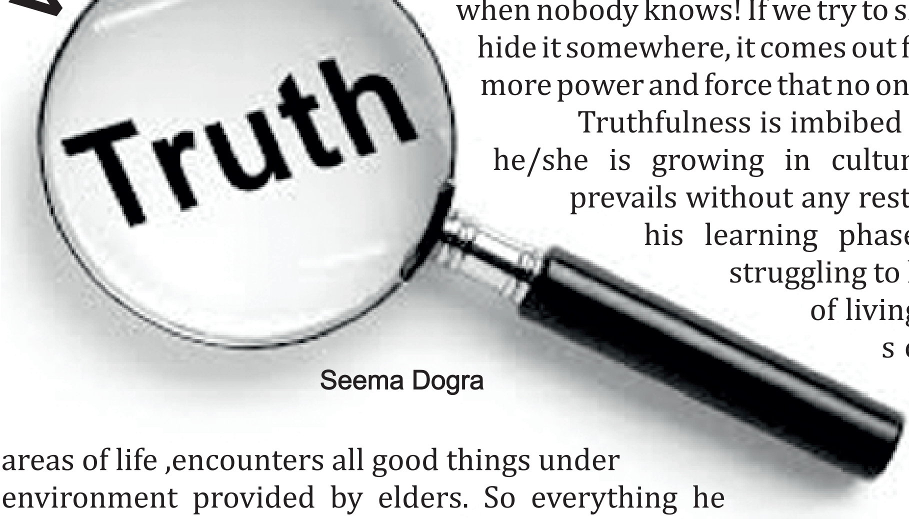

Seema Dogra

Truth is basic virtue of human relationship. There is a very famous saying that Truth opens its mouth one day, but where and when nobody knows! If we try to shut up truth and hide it somewhere, it comes out from hiding with more power and force that no one can prevent!

Truthfulness is imbibed by a child while he/she is growing in culture where truth prevails without any restrictions. During his learning phase of life he is struggling to learn all aspects of living a happy life in society .He touches the all unexplored areas of life ,encounters all good things under the protected environment provided by elders. So everything he does is full of truthfulness and it becomes the way of life. He is ignorant about opposite meaning of Truthfulness. *Truthfulness is very important in building the basic character of a human being.*

There was a woodcutter who lost his axe in water was very sad. He prayed to god to give his axe as he had to cut wood for his livelihood. God came after listening to his prayer. God took out one Silver axe from water and asked him whether it belonged to him or not. He refused and said that his axe was made of iron .God again took out one golden axe and asked him same question .He refused and again said his axe was made of Iron not gold. He categorically requested

To destroy illusion, worship God- Yajurved mantra 2/11.

God to give him his own Iron axe only. So finally God was so impressed by his truthfulness that he gave both Silver & Golden axe to woodcutter along with his iron one!

So this the result of truthfulness. Although this is a story to emphasize the value of truthfulness but who would want to believe this story .This cannot happen in today's world.

If we look at our ancient history, ***king Yudhishtra*** and ***Raja Harish Chandra*** were known for their truthfulness. Raja Harish Chandra sacrificed all his heirloom, in fact everything for truth. All our religious scriptures teach truthfulness to human beings. ***Truthfulness is very important to build the basic character of a man.*** Character of a man is considered good if he believes in truthfulness. He doesn't know the meaning of lie and never lies to anyone. It means he keeps his word words and people respects his words .A truthful man is pious and pure in his behavior. His mind will always be free of worries .On the other hand a liar is always worried of his lies, he or she would be afraid of being caught or found out.

Lies do not remain for long we as human being can't stay away from truth forever. Deep in our hearts we always know the value of truth and about all the lies which we have said in past. Being true to fellow human beings help in building a strong relationship.

In modern era the value of truth is changing with need of the hour! Youngsters lie as per their convenience and requirement. They make or break the truth situation ally. The ***"Chalta hai"*** *attitude is leading this generation towards a very different kind of culture where the value system will be very opposite.*

Another fact is that now a days it has become really very difficult to find out the difference between truth and lie. ***That is why in cites the culture of not trusting anyone prevails in abundance.***

Even if a person tells the truth we don't believe him out rightly without verifying the situation. We look for evidences to validate the truth! The lawyers who are supposed to provide justice, lie so easily to win the case, doctors do not share the truth with patents just to make more money they suggest various tests unnecessarily (exceptions are those few ones who are serving the society), politicians lie to win the voters heart.

If a person is applying for job anywhere, it is believed that information given on resume is not hundred percent correct (not in all the cases though) Candidates make the language more flowery and catchy by using other's information too. The media around us full of lies about their products they sell to consumers. Banks, insurance companies, FMCG Marketing organizations train

their people to lie, just to ensnare the customers and sell their products by hook or by crook! All such lies are considered as management skills! The list is endless.

So accordingly consumers or customers also do not believe the ***"Truthfulness",*** as they are so used to the liars surrounding them ? all the time. In general most of the people around us resort to lies without giving a second thought. ***Lying to each other is blended so hard into our daily lives that it is considered a smartness.*** This attitude of untruthfulness prevails outside our household lives. But question arises that are we practicing same thing inside our houses as well? How must trust do we have for our family members. We expect our children to be truthful .There is no place for lies in our home .But is it actually true! If a person is habitual of lying in relationships outside their houses, same person cannot follow the path of truthfulness at home.

But is it actually helping us? Are we really moving so fast that leaving the values behind? ***What values are we offering to our kids?*** How will they understand the values of life, our great Indian culture about which we profess all around the world? All stories about valour and truthfulness will be only stories of past for reading and forgetting?

This is really very disgraceful for all of us. We all have to do our self-introspection to understand the value of truthfulness if we really want to lead a beautiful and happy lives on this earth.

Further insight by the Editor

In my view, the topic which has been considered by daughter Seema, is the greatest topic of the universe. Vedas preach that from ***(Mansa)*** mind, ***(Vacha)*** voice and ***(Karmanna)*** deeds, nobody should observe/follow falsehood.

The fact has also been stated in Mundakopnishad-

"Satyamev jayatee.... Na Nritam...."

i.e. at last the ***"Truth prevails and not falsehood"***

And even the Yogi who ever follows truth firmly then his voice gets shelter of a result, that is, his speech/voice will never go in vain. Whatever he would say that would always be true. Yogi gets so much power in his voice that if he would say to a person- that he would be religious minded or attain salvation then Yogis' blessings would always be true and not go in vain. ***(Yog Shastra sutra2/36 refers).*** Yes, this is also true that the said Yogi would never bless an undeserving person.

In this regard, I would like to quote ***Manusmriti shlok 4/138*** wherein it is said, ***"Satyam Brooyaat Priyam Brooyaat, Apriyam Satyam Na Brooyaat."*** i.e. always tell truth, tell sweet truth but truth which is uttered

Donot do crookedness- Manusmriti 4/177.

and is felt bitter, should not be told i.e. one should be always sweet spoken.

Earlier the Rishis in Upnishad preach to students ***"Satyam Vad Dharmam Char"*** i.e. in whole life you will have to speak truth always and do moral duties towards family, society and nation. But now, due to lack of facilities to spread vedic knowledge in country, the students are not aware of vedic culture and therefore falsehood cannot be avoided. Therefore truth is the greatest and more great than the practice of moral duties (dharma sadhna).

The whole world still has been remembering the several great dignitaries like Sri Ram, Harishchandra, Yudhishthir, Dashrath, Yayati, Manu Bhagwan etc. who always used to tell truth.

Vyasmuniji has told in swargarohan parv of Mahabharat epic that Yudhishthir who always spoke truth but in whole life once he uttered truth in twisted manner then after death, he was punished by God.

So, we will have to remember that when nowadays it has become a custom of telling lies even for a small benefit then how much serious punishment thereof will be borne by us after death.

According to ***Rigved mantra 10/135/1,2,*** the present human life has been blessed by God to face the result of our previous lives' good and bad deeds in the shape of happiness and sorrows respectively. But the sins (telling a lie is a sin) done in present life will have to be faced in next birth. ***However, the sins done with learned acharya/yogi are to be borne in present life itself.***

Truly, a child learns from his parents, elders and others school going friends etc. but really if parents in the beginning life of a child, teach him to tell always truth and also teach him all other

Without discussion truth cannot be established- Nyaye Shastra.

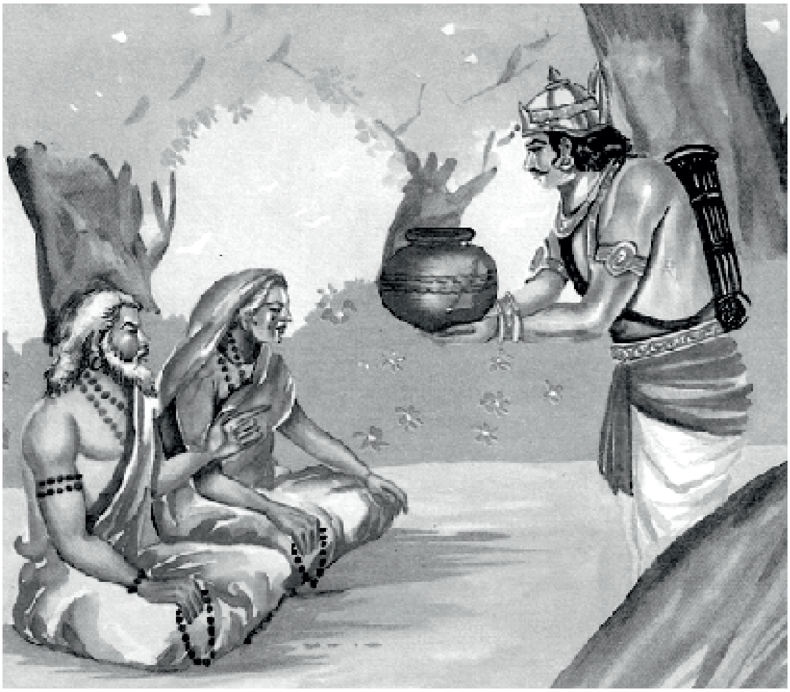

good tasks etc. the child anywhere would not be able to accept the lie. So, it is the moral duty of parents to educate their children to know the value of truth and to tell always truth.

The said story written by Daughter Seema is knowledgeable but is also a symbolic one. So, in such stories, the true knowledge exists which is required to be held in our lives.

There is also a true story about the young age of King Dashrath when he went to a jungle. He listened a voice of taking water from a pond. He thought some man-eater lion etc. is taking water and without knowing the fact he aimed an arrow towards the voice due to which Shravann kumar was hurt, who was actually taking water. King Dashrath was at that time prince and could go away but he had learnt to tell always truth and face consequences. He reached to Shravann Kumar and requested him to forgive him (King Dashrath). In return Shravann kumar told the address of his old and blind parents who were waiting for him to take water in a hut in jungle. Immediately, Shravann kumar died, Dashrath reached the place with dead body of Shravann Kumar and told all truth to his parents. He got cursed by the parents of Shravann kumar to meet with crucial death in separation from his (Dashrath's) dearest son, which in future happened in the case of exile of Sri Ram This had been the character of all Raj-Rishis, Rishi-Munis and even of the public of that time, being the effect of Vedas which has vanished presently.

So, there is a need of spreading of vedic knowledge door to door so that the people especially doctor, lawyers, administrators etc. do not become professional; as written by daughter Seema. VIV

गुरु-शिष्य संवाद

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

वर्षाकाल के पश्चात् जल से सम्पूर्ण पृथिवी तृप्त हो गई और पृथिवी पर अन्न पक गए हैं। गम्भीर गर्जन करने वाले मेघ भी जलवृष्टि करके शान्त हो गए हैं। जल निर्मल हो गया है, सरोवर में कमल खिल गए हैं, खेतों में धान पक गए हैं। इस प्रकार वर्षाकाल की समाप्ति और सुन्दर शरद् ऋतु का आगमन हो चुका है।

आश्रम में शिक्षा प्राप्त करने आए विद्यार्थियों के शरद् ऋतु से बचने के लिए वस्त्र आदि और शिक्षा दे दी गई है। एक कक्ष में अपने—अपने आसन पर बैठे विद्यार्थी, आचार्य के आने की प्रतीक्षा में हैं। शीघ्र ही विद्यार्थियों को आचार्य जी के आने का आभास हुआ और वे अपने—अपने स्थान पर खड़े हो गए। इस बीच आचार्य ने विद्यार्थियों के कक्ष में प्रवेश किया तथा विद्यार्थियों ने उनका अभिनन्दन किया। आचार्य ने सबको आशीर्वाद दिया और अपने आसन पर विराजमान हो गए तथा उन्हें देखकर सभी विद्यार्थी भी अपने—अपने आसन पर बैठ गए।

आचार्य ने विद्यार्थियों के समक्ष अपना पक्ष रखा–

''हे विद्यार्थियों! आज मैं भिन्न—भिन्न वेद मन्त्रों, वाल्मीकि रामायण आदि से प्रश्न करूंगा। मुझे आशा है आप उसका ठीक—ठीक उत्तर देंगे क्योंकि मैंने ये सब ग्रन्थ आपको पहले से ही पढ़ा दिए हैं।'' सर्वप्रथम आचार्य ने ऋचा से प्रश्न किया—

आचार्य– हे पुत्री, ऋचा! आपको ज्ञात है कि संसार में लगभग सभी प्राणी सुख—समृद्धि, ऐश्वर्य आदि की कामना करते हैं। आप वेदानुसार बताएँ कि कौन पुरुष इस सुख—ऐश्वर्य को बढ़ा सकता है?

ऋचा बेटी ने प्रथम आचार्य को नमस्ते की और तत्पश्चात् उनके प्रश्न का उत्तर देना प्रारम्भ किया।

वेद का प्रवचन करने वाला, पिता, माता आदि के प्रतिकूल आचरण ना करें। (मनु स्मृति - 4/162)

ऋचा: – हे आचार्य! आपकी दी हुई वैदिक शिक्षा के अनुसार यह कटु सत्य है कि ईश्वर से उत्पन्न वेदों का ज्ञान अनन्त है। अतः मैं संक्षेप में ही ***सामवेद मन्त्र 247*** को प्रस्तुत करते हुए कहूंगी कि ईश्वर भक्ति के बिना सुख नहीं। अतः वेदानुसार मनुष्य को वेदज्ञ विद्वान् द्वारा नित्य वेदों को सुनकर तथा नित्य अग्निहोत्र आदि करके ईश्वर को प्रसन्न करना आवश्यक है।

ऋग्वेद मन्त्र 1/68/1,2 में भी स्पष्ट उपदेश है कि सब सुख तथा स्वर्ण आदि धन का दाता, एक परमेश्वर ही है। अतः परमेश्वर की पूजा के बिना कोई भी प्राणी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। ***ऋग्वेद मन्त्र 1/67/4*** का भाव है परमेश्वर का ज्ञान–विज्ञान, सत्य विद्या, परमेश्वर की उपासना तथा उत्तम धर्माचरणों के बिना सुख प्राप्त नहीं होता।

पुनः ***ऋग्वेद मन्त्र 4/24/10, 11*** के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जो मनुष्य सब प्रकार से पुरुषार्थ युक्त, उत्तम प्रकार, शिक्षित वाणी से युक्त, धर्मयुक्त पुरुषार्थ से कर्म करते हैं, वे ही विद्या दान करके अपने और अन्य के जीवन में ऐश्वर्य को बढ़ा सकते हैं, अन्य नहीं। अतः सुख प्राप्ति के लिए प्रत्येक नर–नारी को परिवार सहित विद्वानों से वेद सुनने का प्रयत्न करना चाहिए।

आचार्य: – शाबाश, बेटी! आपका उत्तर अति उत्तम एवं हृदय को प्रसन्न करने वाला है। हे पुत्र, सोमेन्द्र! आप बताओ कि जब श्रीराम, लक्ष्मण एवं सीता के संग चौदह वर्ष के लिए वनों में चले गए और श्रीराम के वियोग में वेद के ज्ञाता, प्रजा का पुत्रवत् पालन करने वाले महाराज दशरथ ने शरीर त्याग दिया, उसके पश्चात् क्या वर्णन है?

सोमेन्द्र ने आचार्य जी को नमस्ते की तथा उत्तर देते हुए कहा–

सोमेन्द्र: हे आचार्य! स्वर्गीय महाराज दशरथ श्रीराम के वन जाने के कारण, अपने सुपुत्र भरत को राज्य देकर गए थे; अतः राज्य सभा में उपस्थित सभी लोगों के समक्ष वसिष्ठजी ने कहा कि शीघ्र ही तीव्र वेग वाले घोड़ों पर सवार हो दूत भरत एवं उसके भाई शत्रुघ्न को उनके नाना केकयराज अश्वपति के निवास स्थान से वापिस अयोध्या ले आएँ। दूतों ने शीघ्र प्रस्थान किया तथा उसी रात्रि गिरिव्रज = राजगृह नामक केकयराज की राजधानी में प्रवेश कर गए। दूतों ने राजा अश्वपति से भेंट करने के पश्चात् भरत जी से कहा कि महर्षि वसिष्ठ जी ने आपको शीघ्र अयोध्या चले आने को कहा है।

वेद और विद्वानों की निन्दा, द्वेष, पाखण्ड, क्रोध–अभिमान छोड़ देवें। (मनु स्मृति 4/163)

भरत जी ने दूतों से पूछा– ''मेरे पिता महाराज दशरथ कुशल तो हैं, धर्मानुष्ठानों में रत, धर्मज्ञा, धर्मोपदेश करने वाली आर्या, उदारशील एवं बुद्धिमान् श्रीराम जी की माता कौशल्या निरोग तो हैं?''

पश्चात् दोनों माताओं की कुशलता पूछी, दूतों ने नम्रतापूर्वक कहा– ''आप जिनका कुशल चाहते हैं, वे सब कुशलपूर्वक हैं। अतः आप यात्रा के लिए शीघ्र अपना रथ जुड़वाँए। भरत जी ने भी अपने नाना अश्वपति एवं मामा युधाजित् से आज्ञा माँग कर, अपने भ्राता शत्रुघ्न सहित रथ में सवार हो, अयोध्या की ओर प्रस्थान किया।

हे आचार्य! पराक्रमी भरत शीघ्र ही अयोध्या नगरी में पहुँचे। अयोध्या को दूर से ही देखकर राजकुमार भरत ने सारथी से कहा–''यह पुरी जगत्–प्रसिद्ध, स्वच्छ एवं हरे–भरे उद्यानों से पूर्ण यशस्विनी अयोध्या प्रतीत नहीं होती। अत्यंत समृद्धिशालिनी, राजर्षियों द्वारा पालित, अयोध्यापुरी में पहले यज्ञकर्ता, गुणी एवं वेदों में पारंगत विद्वानों के वेदपाठ का शब्द सुनाई देता था– वह सब आज मुझे सुनाई नहीं देता। रथ, हाथी और घोड़ों पर आरूढ़ होकर जैसे पहले लोग आते–जाते दिखाई देते थे, वैसे आज दिखाई नहीं देते। किसी भी गृहस्थ के द्वार पर पुष्प मालाएँ लटकती दिखाई नहीं देतीं।''

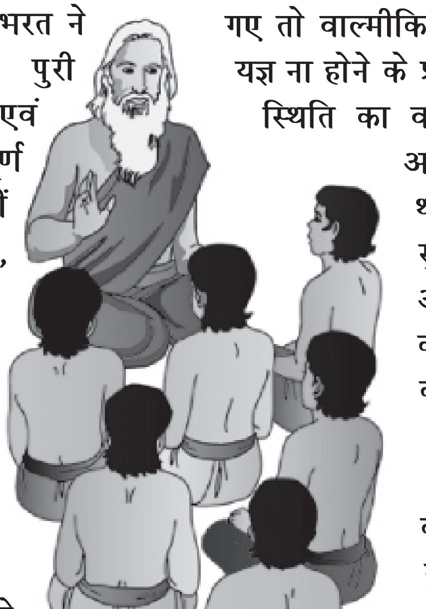

हे आचार्य! यहाँ मुख्य विचारणीय विषय यह है कि राजकुमार भरत आश्चर्यचकित हैं कि राजर्षियों द्वारा पालित, अयोध्यापुरी में यज्ञकर्ताओं, गुणी एवं वेदों के पारंगत, विद्वानों के वेद पाठ सुनाई नहीं दे रहे। इससे यह तो सिद्ध है कि सम्पूर्ण पृथिवी पर ऐसे धार्मिक वैदिक कर्म सदा होते रहते थे। परन्तु हमें यहाँ इस कटु सत्य को भी समझना है कि महाराज दशरथ की मृत्यु के पश्चात् शोकाकुल अयोध्या नगरी में जब यज्ञ, वेद पाठ आदि कुछ समय के लिए रुक गए तो वाल्मीकि जी ने कुछ ही देर के लिए यज्ञ ना होने के प्रभाव से उत्पन्न कैसी विचित्र स्थिति का वर्णन किया है– ''अयोध्या अयोध्या ही प्रतीत नहीं हो रही थी। वेदों के विद्वानों के शब्द सुनाई नहीं पड़ते थे जिससे अपशकुनादि भयंकर निमित्तों को देखकर राजकुमार भरत का मन दुःखी हो रहा था। उन्हें आभास हो रहा था कि उनके बन्धु–बान्धवों का कुशलपूर्वक होना अत्यंत दुर्लभ है, उनका हृदय बैठा जा रहा था। व्यापारी पहले

पुत्र और शिष्य को शिक्षा देने के लिए ही ताड़ना दें। (मनु स्मृति 4/164)

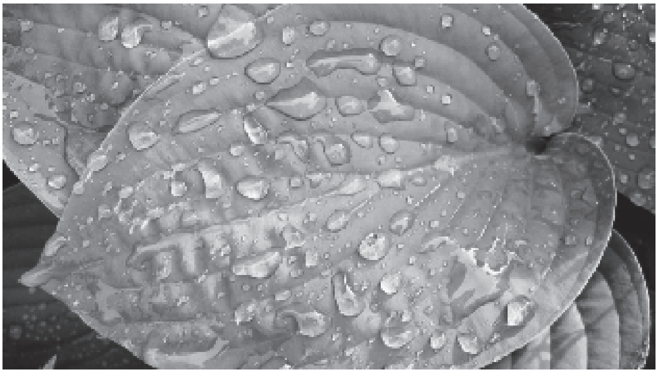

स्तुति करता है, कौन सबका न्याय से पालन करता है।

ओमेन्द्रः– हे आचार्य! जो विद्वान् वेद विद्या के योग–साधना से धनवान् होता है, वह सर्वदा वेदों द्वारा परमेश्वर की स्तुति करता है, अग्निहोत्र, यज्ञादि करता है। जो वेद का ज्ञाता, न्यायकारी राजा पक्षपात् का त्याग करके केवल अपराधी को दण्ड देता और वेदज्ञ धार्मिक विद्वानों का सत्कार करता है, वही न्याय करता है और सबका रक्षक है।

आचार्यः– बहुत अच्छा! पुत्र ओमेन्द्र आप बताएँ कौन विद्वानों का सत्कार करता है?

ओमेन्द्रः– हे आचार्य! ***ऋग्वेद मन्त्र 6/47/15*** के अनुसार जो स्वयं वेद का ज्ञाता, विद्वान् गुण तथा दोषों को जानने वाला है, वही विद्वानों का सत्कार करने योग्य है।

आचार्यः– हे विद्यार्थियों! मैं सोमेन्द्र, ओमेन्द्र और पुत्री ऋचा के प्रश्नों के उत्तरों से अति प्रसन्न हुआ तथा ऐसा प्रतीत होता है कि आप सब वेदाचरण एवं वेदाध्ययन में एकाग्र वृत्ति से संलग्न हैं। आप जैसे बालक एवं बालिकाएँ ही विद्वान्–विदुषी होकर परोपकार आदि करते हुए देश को सुदृढ़ बनाने में सक्षम हैं। VIV

की भांति प्रफुल्ल चित्त दिखाई नहीं देते थे। व्यापार नष्ट होने के कारण व्यापारियों की सारी गति अविरुद्ध हो गई थी। मैले वस्त्र धारण किए हुए, आँखों में आँसू भरे हुए, दीन, चिंता–ग्रस्त, दुबले–पतले और घबराए हुए स्त्री–पुरुष ही नगर में दिखाई पड़ रहे थे। अयोध्या की यह दुर्दशा तनिक सा यज्ञ, विद्वानों के मुख से वेदमन्त्र न सुनने के कारण हो गई थी। गहन् विचार का विषय यह है कि दुर्भाग्यवश भारतवर्ष में तो यज्ञ और विद्वानों के मुख से वेदमन्त्रों का उच्चारण महाभारत युद्ध के पश्चात् लगभग साढ़े पाँच हज़ार वर्ष से रुका हुआ है। फलस्वरूप भारत की दुर्दशा भी अनदेखी नहीं की जा सकती।

आचार्यः– बहुत अच्छा, बेटा! आपने वाल्मीकि रामायण का अच्छा अध्ययन किया है और इस ऋषि–प्रणीत ग्रन्थ का सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रचार होना चाहिए जिससे श्रीराम की जीवनी का सत्य प्रकट हो सके। हे बेटा, ओमेन्द्र! इस संसार में कौन परमात्मा की

राजा के रूप में श्रीराम ब्रह्म के समान प्रजा के रक्षक और सबके पोषक थे। (वा. रामायण)

NO RITUAL AFTER CREMATION

Swami Ram Swarup 'Yogacharya'

"Vayuranilamamritamathedam Bhasmaantang Shareeram, Om Krato Smar Klibey Smar Kritang Smar."

(Yajurved mantra 40/15)

It is observed that after attaining the oldest age of about eighty years and more, there exists effect on mind that the person is near to death and anytime the soul would leave the destructible body. Usually, before the said age and mostly in the childhood and young age, the person does not experience the said effect. ***Idea of the mantra is that realization of God being the main motto of human-life, every human –being must experience the above quoted effect right from childhood till death and by adopting the Vedic path, worship of God, performing agnihotra and practice of yog philosophy must be carried out in daily life, under the guidance of learned acharya while discharging all moral duties towards family, society and nation.*** Otherwise the said effect would not exist in mind. And people would think that they have burnt the dead body but they themselves would never die. Idea of the mantra is that after performing last religious act of cremation amongst sixteen sanskars, no other religious deed etc. is required to be done.

WORD MEANING

(Krato) Oh! human- being, you have to do hard, pious deeds, so at the time of death(Om smar) remember the name of God-Om and feel the presence of God everywhere. (klibey smar) remember the form of God and yourself (kritang smar) whatever pious or unpious deeds have been executed by you in your life, remember those.

MEANING

Oh! human- being, you have to do hard, pious deeds, so at the time of death remember the name of God-Om and feel the presence of God everywhere. Remember the form of God and yourself, whatever pious or unpious deeds have been executed by you in your life, remember those.

IDEA

At the time of attaining death, when the soul starts feeling that soul would leave the human-body then the soul must remember the name of God-Om, must remember the form of God and himself and also whatever deeds he has performed in his life.

Neither have ill-will nor contact with wicked persons (Yajurved mantra 3/30).

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तम् शरीरम्। ओ३म् क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर। कृतम् स्मर॥

यजुर्वेद मन्त्र 40/15

(Vayuhu) the air which exists in body (Anilam Amritam) is under the shelter of subtlest air and subtlest air is under the shelter of immortal prakriti, which is its reason i.e. the air, human-body, all other living-beings' bodies and other innumerable matters of universe are made of prakriti and where from the air, fire, water, space, earth i.e. from five elements, the human body is made, which at the time of death take shelter of prakriti, there at the time of final destruction all worldly matters also take shelter of prakriti.

MEANING

The air which exists in body is under the shelter of subtlest air and subtlest air is under the shelter of immortal prakriti, which is its reason i.e. the air, human-body, all other living-beings' bodies and other innumerable matters of universe are made of prakriti and where from the air, fire, water, space, earth i.e. from five elements, the human body is made, which at the time of death take shelter of prakriti, there at the time of final destruction all worldly matters also take shelter of prakriti.

IDEA

The effect to separate the soul from human-body is based on the said air that is why, mostly the people, at the time of death say that vital air of this body has gone out. Infact, the said effect should remain right from childhood till death. At the time of death, the vital airs, at last, attain its reason, i.e., non-alive matter prakriti and the body seems to become dead. (Aath Idam Shareeram) this destructive body (Bhasmaantang) is required to be burnt.

MEANING

This destructive body is required to be burnt.

IDEA

This destructive body is required to be burnt. Thereafter no other religious deed is required to be performed. The above divine process of cremation which is required to be attained in whole life as well as at the time of death of all human-beings has been preached by Almighty God. So, we need not to perform any religious act after cremation but in the absence of Vedic knowledge, the self-made rituals-deeds have come into practice which according to above preach are of no use. Still if people perform several rituals, then it is at their own discretion. VIV

He who ends enimity, has no enemies (Yajurved mantra 3/31).

स्वामी रामस्वरूप जी के वैदिक प्रवचनों से ली हुई कुछ शिक्षाएँ

1. जो वेद वाणी के विरुद्ध जाता है और वेद वाणी के प्रसार करने वाले ब्राह्मण को सताता है, वह सत्य, बल और पुण्य–लक्ष्मी से रहित हो जाता है। उनका ओज और तेज, सब नष्ट हो जाता है।
2. संसार का कोई भी पदार्थ वेद वाणी और ईश्वर रहित नहीं है।
3. पूर्व के युगों में सम्पूर्ण पृथिवी पर राजर्षियों द्वारा वेद वाणी का प्रचार, प्रसार था। राज–ऋषि स्वयं वेदों के ज्ञाता एवं वेद मार्ग पर चलने वाले होने के कारण, प्रजा में भी घर–घर वेद विद्या का प्रकाश था। अत: पूर्व के युगों की जनता सुखी थी। आज वेद विद्या का पृथिवी पर प्रभाव ना होने के कारण, सम्पूर्ण पृथिवी के राजा एवं प्रजा महा दु:खी हैं। क्योंकि अथर्ववेद बारहवें काण्ड में कहा वेदवाणी का निरादर राष्ट्र की अवनति, मृत्यु (परतन्त्रता) का कारण बनता है।
4. शास्त्र का वचन है– ''नास्तिको वेद निन्दक:'' अर्थात् वेद की निन्दा करने वाला नास्तिक कहलाता है अर्थात् उसके सब कर्म–धर्म इत्यादि वेद विरुद्ध होने के कारण सुखदायी नहीं होते।
5. संतोष धन उत्तम धन है परन्तु योग शास्त्र के अनुसार संतोष धन से भी परम उत्तम धन मोक्ष हैं।

संग्रहकर्ता: बिपिन बधेका (सी.ए.), मुम्बई

पौर्णमासी और अमावस्या
की आगामी तिथियाँ
(अक्तूबर 2019 – मार्च 2020)

अक्तूबर 2019	नवम्बर 2019	दिसम्बर 2019
रविवार, 13 - पौर्णमासी	मंगलवार, 12 - पौर्णमासी	गुरुवार, 12 - पौर्णमासी
सोमवार, 28 - अमावस्या	मंगलवार, 26 - अमावस्या	गुरुवार, 26 - अमावस्या

जनवरी 2020	फरवरी 2020	मार्च 2020
शुक्रवार, 10 - पौर्णमासी	रविवार, 09 - पौर्णमासी	सोमवार, 09 - पौर्णमासी
शुक्रवार, 24 - अमावस्या	रविवार, 23 - अमावस्या	मंगलवार, 24 - अमावस्या

अपनी कीर्ति की रक्षा करो, कीर्ति ही श्रेष्ठ बल है। (महाभारत–आदिपर्व)

MEDICAL SCIENCE IN Atharvaved

1.) Mantra 2/31/1 states that it is the greatness of a person who maintains Brahmacharya. The power of his Brahmacharya is like a rock stone under which the microbes of all diseases are crushed as the grams are crushed beneath rock stone.
So, to gain long, illfree life, Vedas always preach to maintain Brahmacharya.

2.) In the second mantra of Atharvaved, the use of herb- ***"Vacha"*** to destroy the microbes has been preached.
The seen and unseen disease causing microbes and the other worms are destroyed by the use of "vacha" herb.

3.) Mantra 3 also states that vacha medicine destroys the disease causing microbes from root.

4.) Mantra 4 states that use of Vacha medicine destroys the disease causing microbes, which are spread in intestines, head and muscles.

5.) Mantra 2/32/1 preaches that the rays of rising and setting sun destroy several disease causing microbes.

6.) Next mantra preaches that the rays of sun also destroy the disease causing microbes of eyes, head and several other microbes.

गुरु जी का ज्ञान

शीतल गुप्ता

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

वेद क्या हैं? संहिता क्या है? वैदिक ज्ञान जो श्रीकृष्ण, श्री राम के युगों में होता था, वो कभी न जान पाते अगर पूजनीय गुरु जी स्वामी राम स्वरूप जी, जो देव भूमि हिमाचल, योल कैंट, वेद मन्दिर में रहते हैं, नहीं मिलते। गुरु जी अक्सर भजन की यह पंक्ति गाते हैं—

न मिलते आप हमें सतगुरु - न जाने हम कहाँ जाते
हमें बेआसरा पाकर - सताने गम चले आते
ज़माने में पड़े रहते - पड़े ही ठोकरें खाते

सच अगर गुरु जी न मिलते तो सारा जीवन अंधविश्वास में जीते और ज़माने की ठोकरें खाते रहते और कभी भी सत्य का बोध नहीं हो पाता। उन जैसा कोई स्नेह नहीं कर सकता। गुरु जी के बारे में कुछ भी लिखना सरल नहीं है, शब्दों, कलम और पन्नों की बात नहीं है उनके बारे में लिखना।

गुरु जी ब्रह्म ऋषि हैं, वह साक्षात् ईश्वर का रूप हैं, उनके अन्दर ब्रह्म की ज्योति प्रकट है। गुरु जी के अन्दर असीम, अतुलनीय ज्ञान है। गुरु जी के ज्ञान को शब्दों में डाल रही हूँ, अगर कहीं गलती हो जाए तो हाथ जोड़ कर क्षमा चाहूँगी, गुरु जी। गुरु जी कहते हैं सबका अच्छा सोचो, सबका अच्छा करो, प्रेम से रहो, भाई चारा रखो। मैं गुरु जी के ज्ञान के कुछ अंश लिख रही हूँ क्योंकि यह पत्रिका देश—विदेश में जाती है और जो लोग सत्य ज्ञान के जिज्ञासु हैं और आज तक गुरु जी को नहीं मिले हैं उन्हें भी गुरु जी के ज्ञान का बोध हो सके। मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे सारे महासागरों में से एक बूँद का करोड़वाँ हिस्सा, उसका भी करोड़वाँ..... हिस्सा लिख रही हूँ।

राजा दशरथ के मन्त्री अन्याय करने पर अपने पुत्रों को भी दण्ड देने वाले थे। (वा. नारायण)

वेद ईश्वरीय वाणी

1. वेद ईश्वरीय वाणी है, जो हम ब्रह्म ऋषि के मुख से सुनते हैं। वेद शब्द का अर्थ है ज्ञान। वेद सुनने होते हैं, वेद सुनना तप है। जो वेद हम पुस्तक के रूप में पढ़ते हैं, वह संहिता होती है।
2. ब्रह्म ऋषि के दर्शन से ही देव यज्ञ पूर्ण हो जाता है।
3. अपने आचार्य की तन, मन, धन से सेवा करनी चाहिए।
4. ईश्वर और गुरु ही हमारे सच्चा सखा हैं।
5. अपने आचार्य के परिवार का भी आदर, मान करना चाहिए।
6. आचार्य के सामने किसी भी संगत से बात एवं नमस्ते नहीं करनी चाहिए।
7. अश्वमेघ यज्ञ राष्ट्र के कल्याण के लिए होता है।
8. यज्ञ ब्रह्म की उपस्थिति में वेदमन्त्रों की आहुतियाँ डालकर, ब्रह्मा द्वारा मन्त्रों की व्याख्या आदि करते हुए सम्पूर्ण होता है।
9. गुरु जी भी विश्व के कल्याण के लिए प्रतिवर्ष अप्रैल से जून तक चारों वेदों का अनुष्ठान करते हैं।
10. यज्ञ शुभ कामनाएँ पूर्ण करता है।
11. नित्य हवन, अग्निहोत्र, योगाभ्यास, नाम स्मरण करना चाहिए। हम इसी कार्य के लिए आए हैं। ईश्वर प्राप्ति हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति दोनों साथ—साथ करनी चाहिए।
12. माता, पिता, गुरु जनों, बड़ों—बुर्जुर्गों का आदर, सम्मान करना चाहिए।
13. सेवा में दिखावा अथवा उसका व्याख्यान नहीं करना चाहिए।
14. दान ऐसा होना चाहिए—दिन को दो, तो सूर्य को पता न चले, रात को दो, तो चन्द्रमा को पता न चले।
15. यज्ञशाला को ऐसे सजाओ जैसे माता अपने छोटे बच्चों को संवारती है।
16. आश्रम में सबको मिल कर रहना चाहिए, भाईचारा रखना चाहिए।
    (मुझे ऐसा लगता है, हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि हम आश्रम में गुरु जी का ज्ञान सुनने एवं अपने आप को सुधारने आये हैं। किसी को छोटा—बड़ा, लड़ाई—झगड़ा या अपनी राय या अहंकार दिखाने नहीं आए हैं।)
17. क्रोध नहीं करना, अहंकार नहीं करना, नम्रता लाना, मधुर भाषी होना।
18. गुरु जी कहते हैं कि गुरुजनों की आज्ञा का उल्लंघन नहीं हो सकता क्योंकि उनके मुख

श्रीराम धर्मज्ञ, सत्यप्रतिज्ञ, परोपकारी, ज्ञाननिष्ठ, जितेन्द्रिय और समाधि लगाने वाले थे। (वा. रामायण)

से केवल कल्याणार्थ वैदिक शिक्षाएँ ही निकलती हैं। अन्य कुछ भी नहीं।

हम सबको अधिक से अधिक गुरु जी की शिक्षा को आचरण में लाना होगा, अपने मनुष्य जीवन को सफल बनाने के लिए।

संपादक के विचार

शीतल बेटी ने जो कुछ वैदिक प्रवचनों से सुना, पुस्तकों में पढ़ा, भजनों में सुना, वही वैदिक अनुभव अपनी सरल सी सुन्दर भाषा में लिख दिया है, जो प्रशंसनीय है।

सांख्य शास्त्र सूत्र 5/48, सामवेद मंत्र 525 और 944 से सिद्ध है कि वेद नित्य हैं और वेदों का नित्य होना तभी सम्भव है जब वर्तमान में भी और भविष्य में भी, ईश्वर जो नित्य है उसके अन्दर से ही निकलें, मनुष्य की बुद्धि और मुख से ना निकलें। इस संबंध में उक्त मन्त्र प्रमाण देते हैं कि जब कोई योगी समाधिस्थ होता है और उसके अन्दर ब्रह्म प्रकट हो जाता है तब उक्त सांख्य शास्त्र सूत्र एवं वेद मंत्रों के प्रमाण के अनुसार ईश्वर योगी का मुख, जो ईश्वर का ही बनाया उसका अपना मुख है, उससे वेद मंत्र बुलवाता है परन्तु वेद मंत्र निकलते नित्य ईश्वर से हैं। ईश्वर निराकार होने के कारण स्वयं वेद मंत्र नहीं बोलता क्योंकि उसका मुख नहीं है। अपितु वह समाधिस्थ पुरुष, ऋषि–मुनियों के मुख से बुलवाता है। ***यह विश्व का कटु सत्य है। ईश्वर वेद में कहता है कि यदि कोई योगी मिल जाए तो उसकी सेवा से ही अपना जीवन सफल कर लो। अन्य जो पुस्तकें छपी हुई हैं, वे वेद नहीं हैं, संहिताएँ हैं। वेद तो उक्त योगी से केवल सुने जाते हैं। इसलिए वेद कठिन नहीं हैं, उन्हें केवल सुनना है, पढ़ना–लिखना नहीं है। छपी हुई पुस्तकें पढ़ना–लिखना तो वर्तमान–काल की सुविधाएँ है। परन्तु प्रथम वेद सुनकर ही पश्चात् संहिताएँ पढ़–लिखकर उपयोग में तो लाओ अन्यथा सब व्यर्थ है।*** VIV

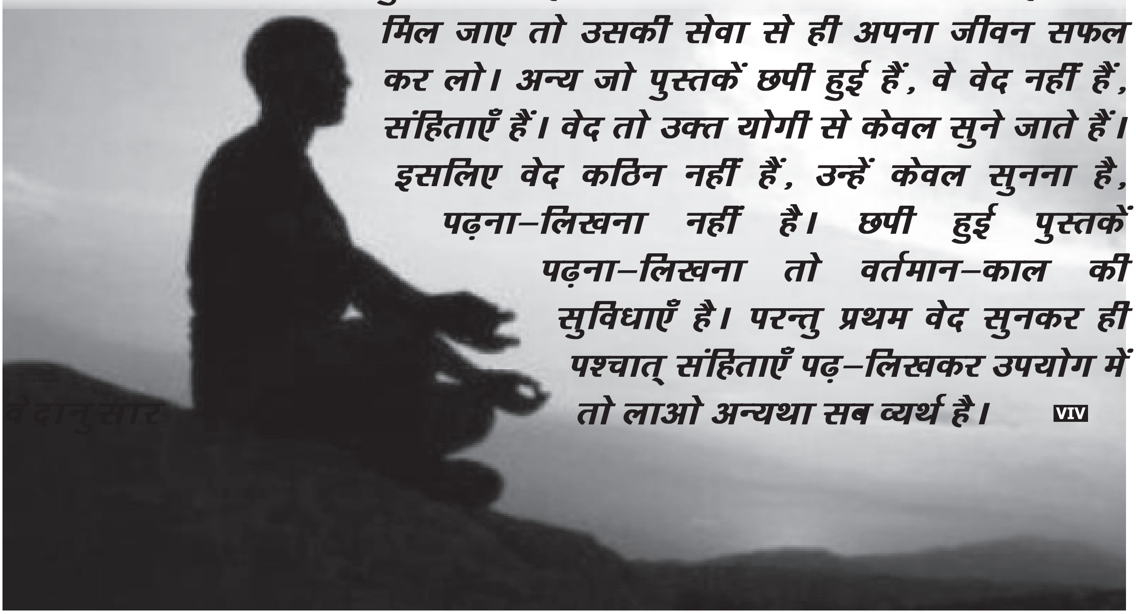

Sugandh 'Sudhi'

papaya

A year back or so my cousin was down with Dengue. Suddenly his Platelet count went very low and was admitted in the hospital immediately. My mother in the process called **Swami Ram Swarup ji** and told Him about my cousin's health. Swami Ji told to take fresh leaves of papaya tree wash thoroughly blend them take the juice out mix it well with honey and give it to the patient for three four times in a day. My cousin did the same and to our surprise within one day his Platelet count was perfectly alright. (though my cousin was referred to Ludhiana for treatment but all his test were ok and he came back the next day only). This is the effect of the leaves of this miracle fruit papaya and what to talk about the fruit itself.

The fruit is extremely rich in Vitamin C has a wide range of health benefits making it a great fruit option to include in diet. Here are some of the top health benefits of papaya.

Papaya is a rich fruit which has many medicinal benefits. Right from the fruit, to its leaves, seeds all have some or the other use to cure and improve our lifestyle.

Benefits of Papaya

Lowers cholesterol

Papaya is rich in fiber, Vitamin C and antioxidants which prevent cholesterol build up in arteries. Too much cholesterol build-up can lead to several heart diseases including heart attack and hypertension.

Helps in weight loss

Those looking to lose weight must include papaya in their diet as it is very low in calories. The fiber content in papaya makes feeling full and also clears bowel movement making weight loss regime easier.

Boosts immunity

Immunity system acts as a shield against various infections that can make you really sick. It is said that a single papaya contains more than 200% of daily requirement of Vitamin C, making it great for immunity.

Good for diabetics

Papaya is an excellent food option for diabetics as it has a low-sugar content even though it is sweet to taste. Also, people who don't have diabetes can eat papaya to prevent it from happening.

Great for eyes

Papaya is rich in Vitamin A which helps protect your vision from degenerating. Nobody wants to lose their ability to see due to diseases like age-related macular degeneration and eating papayas will ensure that one do not see a day where one cannot see.

Protects against arthritis

Arthritis can be a really debilitating disease and people who have it may find their quality of life reduced significantly. Eating papayas are good for your bones as they have anti-inflammatory properties along with Vitamin C which helps in keeping various forms of arthritis at bay. A study published in Annals of the Rheumatic Diseases showed that people who consumed foods low in Vitamin C were three times more likely to have arthritis than those who didn't.

Improves digestion

In today's times, it is near impossible to avoid eating foods that are bad for your digestive system. Often, we find ourselves eating junk food or restaurant food prepared in excessive quantities of oil. Eating a papaya daily can make up for such occasional mistakes, as it has a digestive enzyme known as papain along with fiber which helps improve your digestive health.

Helps ease menstrual pain

Women who are experiencing menstrual pain should help themselves to several servings of papaya, as an enzyme called papain helps in regulating and easing flow during menstrual periods.

Prevents signs of ageing

All of us would love to stay young forever, but no one in this world has managed to do it. Still, healthy habits like eating a papaya daily will prolong the process and may make you look 5 years younger than you are. Papaya is rich in Vitamin C, Vitamin E and antioxidants like beta-carotene which helps prevent your skin from free radical damage keeping wrinkles and other signs of ageing at bay.

Prevents cancer

Papaya is a rich source of antioxidants, phytonutrients and flavonoids that prevent your cells from undergoing free radical damage. Some studies have also linked the consumption papaya to reduced risk of colon and prostate cancer.

Helps reduce stress

After working hard for the whole day, it is a good idea to come home to a plate a papaya. The wonder fruit is rich in several nutrients like Vitamin C which can keep you free from stress. According to a study conducted in University of Alabama, found that 200 mg of Vitamin C can help regulate the flow of stress hormones in rats.

Benefits of Papaya
leaf juice for health

Papaya leaf has medicinal properties. Even Ayurveda considers it an effective means to control a few life-threatening diseases. Though it might be difficult to consume leaves directly, it is advisable to consume it in form of juice.

First of all, take 5-10 fresh and

Prayer goes in vain if hard work is not done accordingly.

tender papaya leaves. Wash them under the running water 5-6 times. Next, put them in the juicer jar and blend thoroughly to a smooth consistency. You can even use a blender to crush the leaves thoroughly. Strain the mixture using a thin cloth or a sieve. Fill the fresh juice in glass bottles and refrigerate to use later.

Fresh papaya leaf juice contains essential compounds like papain and carocain that boost the platelet count and reduce infection during dengue fever. It is suggested to take a dose of 25ml of papaya leaf juice in water twice a day for effective results.

While nothing has been medically documented till date, but experiments suggest that papaya leaf extract can effectively treat malaria. It has plasmodia static properties that indirectly control malarial fever.

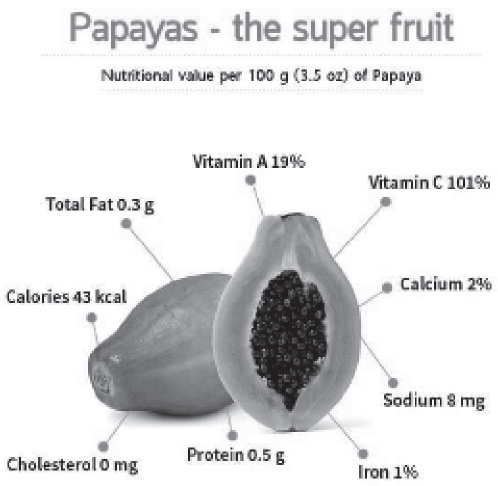

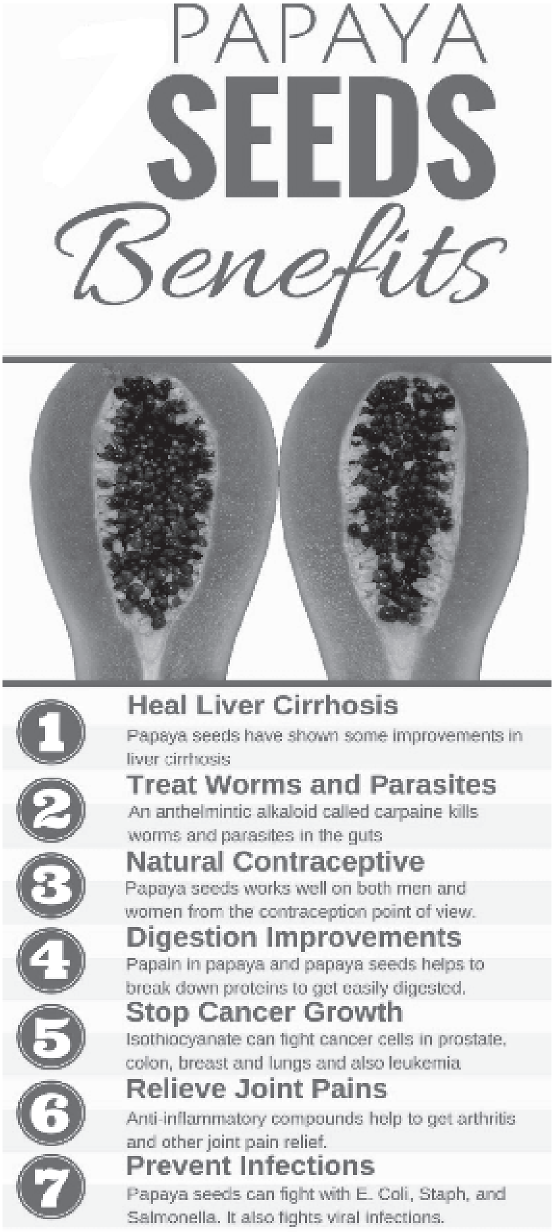

The purpose of this article is to provide information about Papaya only. This information is not intended for use in diagnosis or treatment for any disease. Consult with your Doctor for any treatment.

VIV

स्वस्तिकासन

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

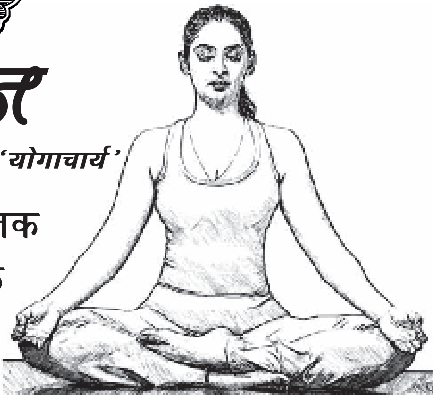

इस आसन का आकार स्वस्तिक चिन्ह के समान है जो कि हमारे देश में शुभ माना जाता है।

विधि

1. ज़मीन पर बैठकर दोनों पाँव मोड़कर जंघा पिण्डलियों के बीच दोनों पंजों को इस प्रकार रखें कि दोनों पंजे दोनों घुटनों के अन्दर आ जाएँ।
2. तत्पश्चात् दोनों हाथों को जंघाओं के अन्त में, घुटनों के ऊपर रखें।
3. जैसे सिद्धासन पर पूरा शरीर सीधा रखा जाता है, उसी प्रकार शरीर को सीधा रखें।
4. घुटना ज़मीन से ऊपर ना उठे। इसे स्वस्तिकासन कहते हैं।

लाभ

1. जिसके पाँव बहुत ठण्डे या गर्म रहते हैं, उनके लिए यह आसन लाभदायक है।
2. पैर में दर्द, पाँव में पसीना आना या फिर पसीने से पैरों में बदबू आना भी इस आसन के अभ्यास से दूर हो जाता है।

अष्टाँग योग साधना अर्थात् आठ अंगों वाली योग विद्या में प्रथम यम, नियम सिद्ध करना आवश्यक है, जिसके विषय में मैने पतांजल योग दर्शन के सूत्रों की व्याख्या में समझाया है। यम—नियम के पश्चात् ही आसन सिद्ध होना सम्भव है, अन्यथा नहीं। पहले भी इस पृष्ठ में यह ज्ञान दे दिया गया है कि सुखपूर्वक किसी भी आसन पर देर तक बैठकर जब साधक को आसन से ही सुख अनुभव होना आरम्भ हो जाए, उसे ही आसन सिद्धि कहते हैं अन्यथा प्रतिदिन एक—एक, दो—दो मिनट आसन लगाकर उठ जाना व्यर्थ है।

VIV

सत्पुरुषों के साथ की हुई मित्रता नष्ट नहीं होती। (महाभारत-वनपर्व)

WIN OVER THE CYCLE OF Birth & Death

Swami Ram Swarup 'Yogacharya'

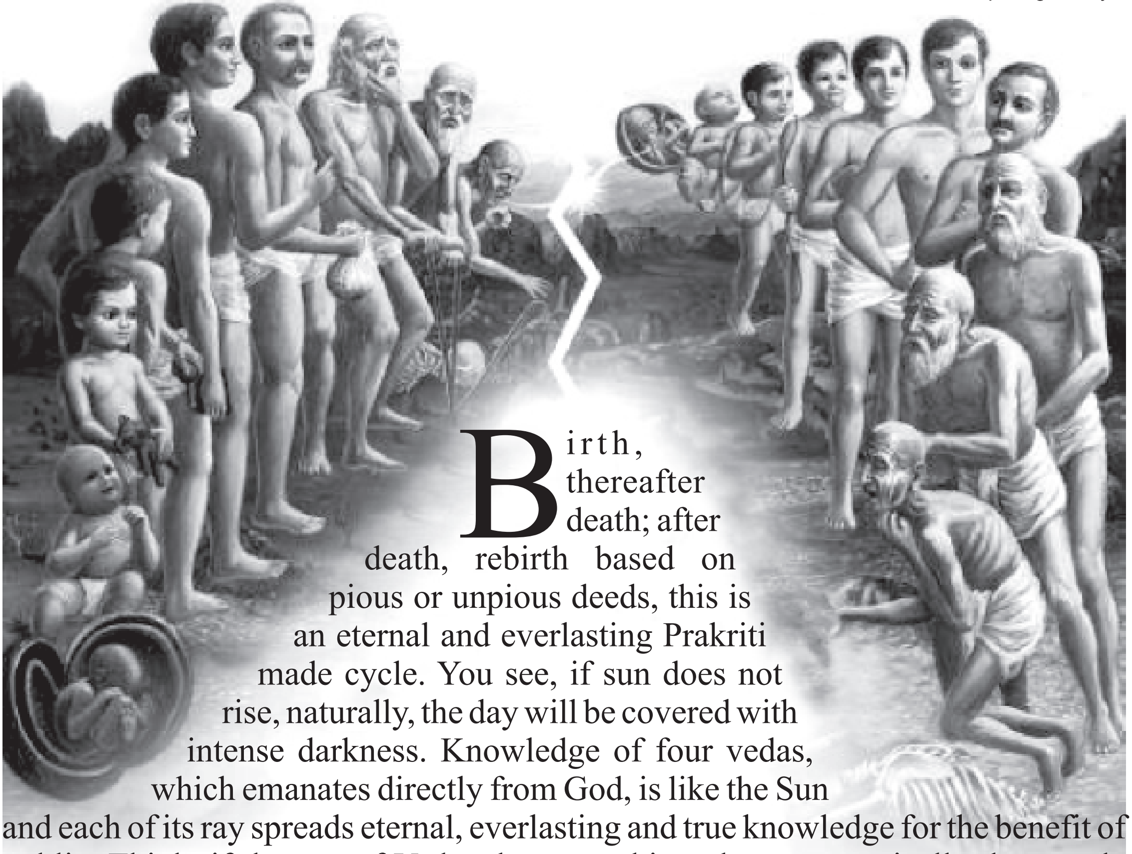

Birth, thereafter death; after death, rebirth based on pious or unpious deeds, this is an eternal and everlasting Prakriti made cycle. You see, if sun does not rise, naturally, the day will be covered with intense darkness. Knowledge of four vedas, which emanates directly from God, is like the Sun and each of its ray spreads eternal, everlasting and true knowledge for the benefit of public. Think, if the sun of Vedas does not shine, then automatically the people indulge in darkness of illusion.

It is sad that after Mahabharat war, for one or the other reason, the sun of Vedas seems to have set down and hence illusion. As a result, mostly the whole world has given up the study of Vedas because of which, further have forgotten the virtues like truth, brotherhood, moral righteousness, Yajyen, service towards parents, elders and learned of Vedas etc., in the absence of which who would be able to discharge his moral duties faithfully. Secondly, there has been a tradition of

falsehood/mendacity- ignoring worship of one God, several types of self-made paths have been originate, casteism, ravages of hatred, dishonour of women, violence, blood bath of humans and corruption, likewise unlimited sins are oftenly occurring everywhere. Study of Vedic culture reveals that in the previous yugas when vedic knowledge was in vogue then the whole world was experiencing brotherhood, love amongst human-beings, happiness and peace, bright future, long, happy life etc. But nowadays, due to lack of knowledge of Vedas we have invited sorrows and unlimited problems in life and thus destroyed our present and next birth, both.

Now, mostly a person is so much attracted towards the pomp and show and materialism, that if he is indulged in business, film industry, progress in science, agriculture , sports, politics and several other matters that he would totally concentrate on that, leaving behind the vedic spiritualism and till the time of his death, he would continue to strive to get progress and to shine his name in his respective field. But very few know about the secret of ***Yajurved mantra 40/15*** that at the time of death, soul remembers the name of God, his form and the deeds done by the soul right from childhood till death, on which the soul repents; gets extremely sorrowful that for whole of life, he was indulged in illusion and has wasted his valuable life in falsehood.

Vyas Muniji in his Mahabharat epic makes us understand the greatest wonder of the world that people are burning the dead bodyone pyre daily but rest of the alive people are so much indulged in materialism that they are totally ignorant about the fact that one day

their body will also be burnt. Vedas are eternal, everlasting and true knowledge about which, who knoews better than previous and present Rishi-Munis, Yogis. Out of them, I would like to quote a story of Mahabharat epic relating to ***Vyas Muniji*** that once he entered the house of ***Maitereya*** where he was very well respected and offered food, water etc. as was usually done in previous yugas. After being satisfied from food and other services, the Rishi smiled. Maitereya requested the Rishi to tell about his reason behind smiling. Rishi answered "Oh! maitereya, ***"how can the Vedas be false?*** Rishi added that your services of offering food etc.,have enabled you and your wife to get Brahmalok in the next birth". ***[Atharvaved kand 9, sukta 6 refers]***.

Idea is this that knowledge of vedas which emanates directly from God, in the beginning of every creation, is eternal and true and the said truth has also been experienced by the previous and present learned of vedas, Rishi-munis and Yogis.

According to ***Sankhya Shastra Sutra5/43,*** the vedas have their own natural power to belief the meaning of ved mantras in the heart of Rishi-munis. So, vedas are self-proof. This land is of Rishi-Munis, Yogis. So, we will have to follow the eternal vedic path, as followed by our previous and present Rishi-Munis. ***Atharvaved mantra 11/3 (2)/31*** preaches that there are two paths of getting progress- one is materialism (worldly matters-science, study etc.), second is Vedic spiritualism (to study Vedas, perform Yajyen/agnihotra, practice of Ashtang Yog philosophy etc).

Therefore progress in both the matters should be done simultaneously as one-sided progress is harmful. Mantra briefs that if a person is only involved in worldly matters and gets

Oh! to my wonder,
In Punjab Kesari,
dated 26/07/2019, I read the
following views of the
great scientist
of the world, named Einstein,
which also prove the contents
of this article.

Celibacy is the base to spend long, happy life - Yajurveda Mantra 19/30

success in business, film industry, science etc. then his life would be full of sins, corruption. Because only vedic spiritualism refrains a person from doing sins. Vedas add if a person gets progress only in spiritualism, ignoring the society, benevolence towards humanity and nation, moral duties etc., and thus spend his life in spiritualism only then in the absence of worldly progress, he would not be able to get long, happy life. Here, I would like to recollect that whether the above quoted ***Atharvaved mantra*** is false, wherein the above preach of getting both progress in materialism and spiritualism is being briefed. No! vedas are eternal and true.

Atharvaved states ***"Pashya Devasya Kavyam Na Mamaar na Jeeryati."***

Oh! Man, study the Vedas which are immortal and never become old. Rigved preaches that the soul comes under the shelter of God, praying that he does not desire for more wealth etc. but being afraid of death, he has come under the God's protection. Infact, at the time of death, the richest person/poor, scientist etc. who have been quoted above, also meet with painful death and remember the fact as quoted above in Yajurved mantra 40/15.

Oh! to my wonder, in Punjab Kesari, dated 26/07/2019, I read the following views of the great scientist of the world, named Einstein, which also prove the contents of this article.

The great Einstein was asked by an American reporter, at the time of his death- "Sir- you are the greatest scientist of this country, what is your last desire and if you are reborn then what would you like to be. ***Einstein*** thought for sometime and thereafter he replied ***"I would like to be anyone except a scientist."*** When the reporter heard the reply from such a great scientist, he was surprised. Reporter added, "Sir, how astonishing words, you are uttering. After successfully doing several inventions yet you donot want to become a scientist in next birth, why, so?" Einstein slightly smiled and then in serious mood uttered,

"I have researched several scientific matters and discovered truth therein. And for the same, I have spent whole of my life. But now I have been experiencing that at the time of death, I am going with empty hands. I could not think over the truth, who knows all the truth about science and its power". The scientist added, "After death, there would not be any existence of Einstein but I could not discover the truth during my life; that WHO MADE ME EINSTEIN. I am sorry that at the time of my death and this sorry will remain forever, that being a scientist, I had

been searching several matters but I have failed to discover myself. Why my attention was not drawn towards the unknown truth and discovery of soul/God? If there is a rebirth and I get it then I pray to God that in the next birth, I become a self-realised and self-explorer learned saint and become successful to discover about the life and the greatest power (God) and self-realization."

Conclusion of the thought of the greatest scientist Einstein is this that the science which he discovered and got several highest titles are of no use if a person does not discover himself and God by real, eternal worship. The said knowledge was only based on the preach of a learned saint to him but not realisation, which fact he has uttered above.

So, worldly progress (science etc.) and real worship of God, the said both paths must be continued in life and progress simultaneously. Infact, this is the way to spend life. One-sided progress is needed not. Scientist Einstein himself states, being a scientist, he could not discover himself. Infact, the thought's uttered by Einstein tally with Vedas' preach. For example- Einstein stated that whatever we discover, the God already knows it. The said thought is according to ***Yajurved mantra 7/29*** wherein it is preached, Oh! man, your birth in human-life is meant to discover, "Kaha Asi" that Who you are.

Einstein has similarly said that he could not discover himself.

Death is a bitter truth, the truth uttered by Einstein at the time of death may be remembered by some people who were present there and story published in the above quoted newspaper may also be remembered by us for sometime but time is labouring on and along with the time, the valuable thought of Einstein will be ignored and demolished because the tradition of people of present times is to earn money, money and money, materialistic articles, materialistic articles and materialistic articles, merriment of senses and perceptions. Due to the said illusion, human-beings have forgotten vedic path and thus God. VIV

Human-being can never be desireless even for a second- Yajurved mantra 3/27.